मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अप्रैल २००७ ▸ वर्ष ५७ ▸ अंक ४

सम्मेलन के इतिहास में प्रथम मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन

राजनीति में मारवाड़ियों की संख्या बढ़े - *संतोष बागड़ोदिया, सांसद*

समाज में नेतृत्व का अभाव - *रामअवतार गुप्ता*

संतोष बागड़ोदिया, सांसद रामअवतार गुप्ता, संपादक सन्मार्ग

अब सम्मेलन ७७ प्रांतों में छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन गठित

सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा रायपुर प्रेस क्लब में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए। साथ में रामअवतार पोद्दार एवं संतोष अग्रवाल।

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance infrastructure. And there are Companies that also finance dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solutions. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistently acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास

अप्रैल, 2007
वर्ष 57, अंक 4
एक प्रति - 10 रु.
वार्षिक - 100 रु.
संपादक : नंदकिशोर जालान
सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, 152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7, फोन : 2268-0319 के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा छपते छपते, 26-सी क्रीक रो, कोलकाता-700014 में मुद्रित।

सूचना

समस्त सम्मेलन की शाखाओं से, महिला सम्मेलन, मारवाड़ी युवा मंच की शाखाओं, समाज की अन्य सभी संस्थाओं तथा लेखकों से अनुरोध है कि **समाज विकास** में प्रकाशन हेतु प्रकाशनीय सामग्री माह की 10 तारीख तक प्रेषित करने की कृपा करें ताकि अगले अंक में उन्हें प्रकाशित किया जा सकेगा।

– सम्पादक

क्रमांक

राजनीति संख्या का खेल

– सांसद संतोष बागड़ोदिया

देखें पृष्ठ 13

चिट्ठी आई है — पृष्ठ 4 - 5

कविता - भूपेन हजारिका — पृष्ठ - 6

सम्पादकीय — पृष्ठ - 7

कविता, अहिंसा के अवतार ... — पृष्ठ - 8

अध्यक्षीय — पृष्ठ - 9

राजनैतिक चेतना जगाने ... — पृष्ठ - 10

प. बंगाल की राजनीति... — पृष्ठ - 11-12

राजनीति कार्यकर्त्ता सम्मेलन — पृष्ठ - 13-21

संकीर्णता से उबर .... — पृष्ठ - 22

छत्तीसगढ़ प्रांतीय ... — पृष्ठ - 23-29

विनाश की बजाय... — पृष्ठ - 30

युगपथ चरण — पृष्ठ - 31-34

चिट्ठी आई है

प्रेरक लेख भी पढ़ने को मिले

'समाज विकास' का मार्च अंक मिला। सामाजिक व सांगठनिक गतिविधियों के साथ-साथ कई प्रेरक लेख भी पढ़ने को मिले, जिनमें उच्च संस्कारों की नींव, घरेलू हिंसा का स्वरूप क्या है तथा राजस्थान निर्माण की ऐतिहासिक प्रक्रिया इत्यादि प्रमुख लेखों के समागम से पत्रिका की उपयोगिता में वृद्धि हुई है।

समाज विकास के इस अंक को सुन्दर एवं उपयोगी स्वरूप प्रदान करने हेतु आप तथा संपादक मंडल के समस्त साथियों को मंच परिवार की ओर से बधाईयां।

-अनिल के. जाजोदिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच, वाराणसी

जिंदगी सुधर जायेगी

समाज विकास मार्च-2007 में सम्मेलन द्वारा **उच्च-शिक्षा कोष** गठन का निर्णय के बारे में पढ़े। बहुत ही सराहनीय एवं स्वागतयोग्य प्रस्ताव आपने रखा है। आपके विचार को दाद देनी पड़ेगी, आप बहुत ही उच्च विचार के लौहपुरुष हैं। ऐसा विचार मन में लाना ये सबसे बुद्धिमानी कहलाता है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतारजी पोद्दार का प्रस्तावित कार्यक्रम भी स्वागत योग्य है जी। आने वाले दिनों में जो उच्च तकनीकी शिक्षित बच्चे का जो अभाव हो रहा है उसमें ये 'लोन' का प्रावधान की सुविधा हो जाए तो उनकी जिंदगी सुधर जायेगी। बच्चे देश के एक नागरिक हैं - कल वह बच्चा देश का राष्ट्रपति बन सकता है। कौन बता सकता है किसके किस्मत में क्या लिखा है। ये उच्च शिक्षा कोष गठन का निर्णय शीघ्र से शीघ्र प्रस्ताव में पास करके लागू हो जानी चाहिए।

-शिवशंकर अग्रवाल
ए.के.एस.एस रोड, बलांगीर, उड़ीसा

मृतक कार्यों को सुगम बनायें

शादी विवाहों के सुचारू रूप से सम्पन्न कराने की भारी आवश्यकता है। शादी-विवाहों की समस्या के अलावा आपका ध्यान **मृतक कार्यों** को भी सुगम बनाने की तरफ खींच रहा हूँ। अंध विश्वास और दकियानूसी तथा अनावश्यक भय के कारण अनेकों परिवार गहरे आर्थिक संकट में फंस रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवारों को हम छोड़ दें तो 80 प्रतिशत परिवारों के सामने बड़ी विकट परिस्थिति निर्मित हो रही है। दाह-संस्कार के साथ मृतक की आत्मा की मुक्ति के नाम पर कई तरह के पूजा-पाठ, गंगा स्थान, पिंडदान, गरूड़ पुराण का पठन आदि सम्पन्न कराना गरीब व्यक्ति के लिए भारी मुसीबत खड़ी कर देते हैं। कई परिवारों को तो कर्ज लेकर भी इन परम्पराओं को सम्पन्न कराना पड़ता है। उनकी आंखों के सामने स्वर्ग-नरक का डरावना दृश्य उपस्थित कर भयादोहन किया जाता है। मृतक की आत्मा की मुक्ति के नाम पर पुरोहितों और कटया को बहुत सारा सामान जैसे सोना, चांदी, गाय, रुपया, पैसा, पलंग, बिस्तर, पहनने के सभी कपड़े, जूता-चप्पल, बर्तन, छाता के अलावा शक्ति भर अनाज आदि लोग देते आ रहे हैं यह एक पाखंड है - अनावश्यक है, इस तरह की दान-दक्षिणा से मृतक को कुछ भी नहीं मिलता है। मृतक के नाम पर किया जाने वाला पूजा-पाठ से बचते हुए प्रातः और संध्या सामूहिक प्रार्थना, भजन-कीर्तन करना ही श्रेष्ठ है। दान धर्म करना उत्तम कार्य है लेकिन अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार हो।

हरप्रसाद अग्रवाल
रायपुर

कड़ाई से लागू करें

मार्च 2007 का अंक मेरे सामने हैं, जिसमें **वैवाहिक आचार-संहिता** के 9 सूत्र आपने प्रकाशित किए हैं, बहुत ही सुन्दर विचार है सामाजिक दृष्टिकोण से। परन्तु सिर्फ प्रकाशन से ही क्या होगा? आज भी मध्यम श्रेणी और उच्च श्रेणी के विवाहों पर अनाप-शनाप खर्च लगता है। बहुत ही आडम्बर युक्त पंडाल बनते हैं। सौ से अधिक खाद्य पदार्थ बनते हैं। बारात के आगमन पर हाई टी होती है, जिसमें पचासों तरह के व्यंजन रहते हैं और उसके बाद रात का भोजन। मेरी राय है कि सिर्फ विज्ञापन करने से ही इसका कोई निष्कर्ष नहीं निकलेगा। परन्तु यदि सम्मेलन कुछ व्यक्तियों का एक दल/कमेटी बनाये जो कि विवाह के मौसम में हर आडम्बरयुक्त विवाह पर कड़ाई से लागू करें तो शायद इस बबात कुछ बात बनें।

-नारायण तुलस्यान,
कोलकाता

क्षमा याचना करें

श्री किशनलाल ईसरवालिया का पत्र, एक ही पृष्ठ पर आपने दो बार छाप दिया है जो पत्रकारिता की दृष्टि से त्रुटि है। इस भूल को अगले अंक में स्वीकार करते हुए क्षमा याचना करना उचित है।

-मोहनलाल चोखानी, नागपुर

(आपके पत्र हेतु धन्यवाद भविष्य में ऐसी त्रुटी नहीं हो उसका ध्यान रखा जायेगा- संपादक)

रंगों से सराबोर फरवरी अंक

रंगों से सराबोर फरवरी अंक पढ़ा। वैवाहिक आचार संहिता के बारे में सम्मेलन द्वारा किये जा रहे कार्य फलदायी रहेगा। विवाह में मिलनी लेने पर, सजन गोठ बन्द पर कई विषयों पर (उत्कल प्रांतीय सभा जो कि 2 एवं 3 सितम्बर भुवनेश्वर में आयोजित हुई) विस्तार में खुला मंच में चर्चा हुई थी। सिर्फ हम जब एकत्रित हों तब बात कर लें पर ऐसे प्रयुक्त रूप से निभाने पर कार्य होता है।

-श्रीमती सम्पत्ति मोडा

अराधना अपार्टमेंट, विश्वनाथ लेन, कटक (उड़ीसा)

मन मयूर थिरक उठा

समाज विकास का फरवरी अंक 'होली विशेषांक' के रूप में पाकर मन मयूर थिरक उठा। अंक सचमुच रंगारंग बन पड़ा है। होली के पावन पर्व पर वितरित सम्मानोपाधियां इन्द्रधनुषी हैं। सम्पादकीय में पत्रकारिता के गिरते स्तर को लेकर व्यक्त चिन्ता पूर्णतः उचित है। आज की पत्रकारिता अपने उच्च लक्ष्य से भटक कर व्यावसायिक हो गयी है। समाज विकास सामाजिक क्रान्ति की ज्योति प्रदीप्त करता रहे, यही हार्दिक अभिलाषा है।

-युगल किशोर चौधरी

चनपटिया, प. चम्पारन (बिहार)

Holi Visheshank issue of Samaj Vikash is very much appealing. Now-a-days the activities of the Sammellan is fast moving. Efforts to be made for monthly get together of general members in a function, so that the Sammellan get its recognition & expansion throughout the Marawari communities.

-G. S. Singhania

Jodhpur Park, Kolkata- 68

लघु कथा

लोक कल्याण

स्वामी रामानुजाचार्य शठकोप स्वामी के शिष्य थे। दीक्षा देते समय गुरुजी ने उन्हें जीवोद्धार और ईश्वर-प्राप्ति का गूढ़ रहस्य बताकर कहा, "बेटा, इस रहस्य को गुप्त रखना।"

किन्तु रामानुजाचार्य गुरु के आदेश का पालन न कर सके। गुरुजी से उन्हें जो अमूल्य ज्ञानराशि मिली थी, उसे वह सबको बाँटने लगे।

शठकोप स्वामी को जब यह पता चला तो वह बड़े तिलमिला उठे। उन्होंने तत्काल ही रामानुजाचार्य को बुलाया और गरजकर पूछा, "तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर, धर्म के गोपनीय रहस्यों को प्रकाशित कर रहे हैं, इसका परिणाम जानते हो?"

रामानुजाचार्य ने कहा, "जानता हूँ भगवान्, गुरु की आज्ञा न मानने का दण्ड घोर नरक है।"

शठकोप स्वामी तीखे स्वरों में पूछा, "फिर तुमने जान-बूझकर ऐसा पाप क्यों किया, जिनके लिए तुम्हें नरक भोगना पड़े?"

रामानुजाचार्य ने उत्तर दिया, "भगवन् परोपकार के समय मनुष्य को स्वार्थ का ध्यान कहाँ रहता है। मैंने जो कुछ किया है, लोक कल्याण की दृष्टि से किया है। आपने मुझे जो अमूल्य ज्ञान दिया है, वह सबके लिए उपयोगी है। इसलिए मैंने उसको अपने पास छिपाकर रखना उचित नहीं समझा। यदि इसके लिए मुझे घोर नरक में जाना पड़े तो भी मुझे प्रसन्नता होगी।"

शठकोप स्वामी रामानुजाचार्य के इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने रामानुजाचार्य को हर्षित होकर गले लगा लिया, और उन्हें लोगों में ज्ञान के प्रचार के लिए उत्साहित भी किया।

कृतघ्नता

एक आदमी जंगल में चला जा रहा था। मार्ग में उसने देखा कि एक सर्प पत्थर के नीचे दबा पड़ा है। उसका अन्त निकट है। यदि उसे निकाला न गया, तो वह मर जाएगा।

मनुष्य को दया आ गयी। उसने पत्थार हटा दिया, परन्तु सर्प बड़ा कृतघ्न निकला। पत्थर हटते ही उसने मनुष्य से कहा, 'मैं तुम्हें खाऊँगा।'

आदमी डरा, किन्तु धैर्य रखखर उसने सर्प से कहा, "उपकार बदला तुम्हें इस तरह नहीं लेना चाहिए।"

सर्प अपनी बात पर अड़ा रहा। अन्त में आदमी ने उसे इस बात के लिए राजी कर लिया कि वे दोनों किसी को अपना न्यायाधीश नियुक्त कर लें। उसका जो निर्णय होगा, वह दोनों को मान्य होगा।

इस बात को तय करने के लिए वे दोनों गीदड़ के पास गये। गीदड़ सारी स्थिति समझ गया। बोला, "पहले मैं वह जगह और पत्थर देखूँगा, जहाँ सर्प दबा पड़ा था।"

घटना स्थल पर पहुंचकर गीदड़ ने कहा, "मुझे भरोसा नहीं आता कि आदमी इतना भारी पत्थर उठा सकता है। मैं देखना चाहता हूँ कि सर्प कैसे दबा हुआ था।'

सर्प उसी स्थान पर जाकर लेट गया। आदमी ने पत्थर सर्प पर पूर्ववत् रख दिया। तब गीदड़ ने कहा, "ठीक है, ऐसे स्वभाव के प्राणी का यही उपाय है, इसे मरने दो। इस पर दया करने का अर्थ है, अपनी मृत्यु को निमन्त्रण देना।" ●

ओ गंगा बहती हो क्यों?

(हिन्दी में अनुवाद)

-डा. भूपेन हजारिका

विस्तार है अपार
प्रजा दोनों पार
नि:शब्द सदा, ओ गंगा तुम
ओ गंगा बहती हो क्यों ?
नैतिकता नष्ट हुई
मानवता भ्रष्ट हुआ
निर्लज्य भाव से बहती हो क्यों ?
अनपढ़ जन अक्षरहीन
अनगिन जन खाद्य विहीन
नेत विहीन देख मौन हो क्यों ?
इतिहास की पुकार
करें हुँकार
ओ गंगा की धार
निर्बल जन को सकल संग्रामी
समग्रगामी बनाती नहीं हो क्यों ?
व्यक्ति रहे व्यक्ति केन्द्रित
सकल समाज व्यक्तित्व रहित
निष्प्राण समाज नहीं तोड़ती हो क्यों ?
स्रोतस्विनी तुम न रही
तुम निश्चय चेतन नहीं
प्राणों में प्रेरणा बनती न क्यों ?

ओ गंगा बैव है क्यूं?

(राजस्थानी में अनुवाद)

लांबी है अथाग, प्रजा दोन्यू पार
करे लाय-लाय, अणबोली सदा ओ गंगा तू
ओ गंगा बैव है क्यूं ?
नेकपाणो नष्ट हुयो, मिनख पणो भ्रष्ट हुयो
निरलज्जा बण बैवे हैक्यूं ?
अणभणिया आखरहीन, अणागिण जन रोटी स्यूं तीण
नैत्रहीन लख चुप है क्यूं ?
इतिहास की पुकार, करें हुंकार-
हे गंगा की धार निवले मानव ने जुद्ध वणी,
सब ठौरजयी वणावै नहीं है क्यूं ?
मिनक रहवै मिनखांचारी, सगला समाज निभ्हे स्वैच्छाचारी
प्राणहीन समाज नै तोड़े नहीं है क्यूं ?
सुरसरी तू ना रै वै, तू निश्चय चेतना हीन
प्राणों में प्रेरणा बणै नहीं है क्यूं ?
ओ गंगा बैवे है क्यूं ?

अनुवाद-राजू खेमका, असम

सच की सूरत

मिसेज सविता सेन समाजसेविका थीं। महिलाओं के कल्याण की विशेष चिंता करती थीं। एक दिन घर से ऑफिस जाने को निकलीं, तो उनकी सहेली हेमा मिल गई। वह तनाव और गुस्से में भरी दिखाई दी। पूछा-'क्या बात है हेमा, बहुत टेंशन में हो ?' हेमा ने बताया, 'हद हो गई मिसेज सेन! मेरे तो तन-मन में आग लग गई है। वह आदमी है या राक्षस ? अपनी पत्नी को बेरहमी से पीटे जा रहा है और पत्नी मछली की तरह तड़प रही है।'

हेमा ने बताया-'यहां पास के सर्वेंट क्वार्टर में वॉचमैन बिरजू अपनी पत्नी राधा को पीट रहा है।'

'चलो, चलकर देखते हैं।' मिसेज सेन हेमा को साथ लेकर बिरजू के घर जा पहुँची। दोनों ने कमरे में झांककर देखा बिरजू लकड़ी से राधा को पीट रहा था और राधा मार खाकर तड़प रही थी, रो रही थी। उसके पास खड़ी उसकी दस साल की लड़की मुन्नी उसे बचाने का प्रयत्न कर रही थी। दोनों समाजसेविकाएं अपने को रोक नहीं पाई, कमरें में जा पहुँची। मिसेज सेन ने चिल्लाकर कहा, 'ये क्या रो रहा है ?'

उन्हें देखकर बिरजू रुक गया। वह बेहद नशे में था। लकड़ी फेंककर लड़खड़ाते कदमों से बड़बड़ाते हुए बाहर चला गया। मुन्नी अपनी माँ की छाती से लग गई। वह भी रो रही थी। माँ का दर्द समझती थी, उसे महसूस करती थी। उस दर्द को कम करने के लिए अपने नहीं, माँ के आँसू पोंछने लगी। उसकी पीठ सहलाने लगी।

'यह तो बहुत अन्याय है।' मिसेज सेन ने कहा, 'राधा, मैंने देख लिया, तुम्हारा पति तुम पर बहुत अत्याचार करता है। ऐसे दुष्ट आदमी को सजा मिलना चाहिए। तुम मेरे साथ पुलिस थाने चलो, बिरजू के खिलाफ रिपोर्ट लिखाओ।' राधा ने कोई जवाब नहीं दिया। चोट के कारण कराहती रही, रोती रही। मिसेज सेन ने गुस्से में कहा, 'अब बिलकुल बर्दाश्त मत करो। चलकर रिपोर्ट लिखाओ। मैं तुम्हारे साथ हूँ। मुझ पर भरोसा रखो। मैं जालिम आदमी को लंबी सजा दिलाऊँगी।'

'रहने दो बहनजी, मुझे नहीं करनी रिपोर्ट!' राधा ने अपने पर काबू पाते हुए जवाब दिया। 'पति जेल चला जाएगा तो मेरे बच्चों को कौन पालेगा ? अपनी सलाह अपने पास रखो। हमारा घर मत बिगाड़ो बहनजी। मैं जानती हूं मेरा पति नशे में है। मेरी भी गलती है। मैंने खाना गर्म करके नहीं दिया, इसलिए उसे गुस्सा आया। सुबह नशा उतरने पर अपनी गलती के लिए माफी माँग लेगा। ...छोटी-सी बात के लिए हमें पुलिस थाने और कोर्ट-कचहरी के झमेले में मत डालो बहनजी।'

-कमलचन्द वर्मा

साभार : सन्मार्ग

संपादकीय

यह आत्मसंतुष्टी किस काम की

विश्व में तेजी से परिवर्तन देखने को मिल रहा है, भारतीय शास्त्रों के अनुसार भले ही हम इस काल को कलयुग की संज्ञा दे दें, परन्तु विश्व की नजर से अवलोकन करें तो, इतने सारे परिवर्तन सत्ययुग की उन काल्पनिक कथाओं से भी कई माने में आगे हैं। किसी भी मायने में पीछे नजर नहीं, हाँ सिर्फ एक मामले में विश्व सिमटता जा रहा है, वह है अपनों का दु:ख-दर्द। दुनिया में क्या हो रहा है, यह बात हमें पलकों में पता चल जाती है, परन्तु अपने ही घर के एक कमरे में अपने माता-पिता किस हालत में है, किस मानसिकता से गुजर रहे हैं, उनकी क्या व्यथा है ? इस बात का ख्याल हमें तब तलक नहीं आता जब तलक कि कोई दूसरा आकर नहीं बताता हो। हम इतने विकसित हो चुके हैं कि हमें परिवार की दु:ख -तकलीफों का एहसास तक नहीं रहा। हमें क्या करना है, और क्या नहीं इसके लिए हमें किसी की कोई जरूरत नहीं। धन हम कमाते हैं, इसमें समाज का क्या योगदान है ? वेवजह समाज इनको सलाह दे, यह बात गले नहीं उतरती। माता-पिता हो या परिवार की जिम्मेदारी इनको इस बात का अहसास है, कि इन्हें क्या करना।

मृत्योंपरान्त शोक-सभा में किसी प्रकार कि कमी न रह जाये, किमती शॉल का किनारा फाड़ के एक तरफ फेंक देने वाला समाज, सुख-सज्जा के नाम पे लाखों रुपयों का दान किसी आत्मा की शान्ति के लिये नहीं, समाज में अपनी मिथ्या प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए करता है। मृतशया पे सोया व्यक्ति जब उनसे दवा नहीं मांगता, गर्म कपड़े, धोती-साड़ी, प्रेम के दो शब्द नहीं मांगता उस समय इनके इस तरह के व्यवहार पे हमें आश्चर्य तक नहीं होता। भला हो भी क्यों ? यह हमारे समाज कि एक सामाजिक परम्परा जो ठहरी। आत्मा को शान्ति के लिए बच्चे इतना भी नहीं करें तो भला समाज इनको क्या कहेगा ? समाज की चिंता इन्हें तब नहीं होती, जब माँ-बाप घर के एक कोने में कारावास की जिन्दगी जीते हैं। यह हमारे विकसित समाज के लिये के प्रतिष्ठा का प्रश्न भले ही न हो, हाँ इतना जरुर है कि हम दुनियाँ के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना तो चाहते परन्तु समाज की उन व्यवस्था को भी नहीं छोड़ सकते जिससे हमें मिथ्या आत्मसंतुष्टी मिलती हो। ऐसा समाज जिसमें माँ-बाप को कष्ट मिले, उसे समाज के बीच आत्मसंतुष्टी किस काम की ? हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता की यह देन है कि हम संयुक्त परिवार में जीते हैं, भरा-पूरा परिवार आपसकी सहयोग की भावना, भाई-भाई का दर्द, माता-पिता, दादा-दादी का स्नेह एक साथ हमें एक ही परिवार में मिल जाता है। परन्तु हमारी सम्पन्नता ने इस कड़ी में "वृद्धाआश्रम" को जोड़कर जरूर समाज के दर्द को कुछ पल के लिए दूर कर दिया है। परन्तु इस व्यवस्था ने हमारे समाज के खोखलेपन को भी उजागर भी किया है। भारतीय समाज का एक वर्ग भले ही ऐसी व्यवस्था को सही ठहराता हो, परन्तु हमारी संस्कृति में इस तरह की व्यवस्था का कोई स्थान नहीं है।

हां! भी यह बात स्वीकारने योग्य है कि जो लोग ऐसे कार्य में लगे हैं, वे जरूर किसी न किसी रूप से यह महसूस करते हैं, कि उनका अथवा कतिपय ग्रसित माता-पिता, दादा-दादी का दर्द कुछ कम किया जा सके, यह कैसी व्यवस्था है समाज की हम मनन करेंगे तभी आगे चलकर हमारे बच्चे भी।

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

प्यारी बेटियां

चिड़ियां, महकते फूल सी
लगती हैं बेटियां
प्यारी बहुत ही प्यार में
लगती हैं बेटियां
आंगन में दिल के झांक के
देखें तो एक बार
आंखों की प्यारी पुतली सी
लगती है बेटियां
सातों स्वरों में कूंकती
कोयल सी बेटियां
सातों रंगों को है लिए
किरणों सी बेटियां
गुड्डा किसी का प्यार
तो गुड़िया है किसी की
सखियों के संग ब्याह
रचाती हैं बेटियां
मां के लिए हैं स्वप्न का
शृंगार बेटियां
बाबुल के लिए जान से
प्यारी हैं बेटियां
हंसने से उनके हंसती हैं
दीवारें घरों की
भईया के सूने हाथ की
राखी हैं बेटियां
घर को धरा का स्वर्ग
बनाती है बेटियां
खुद को जला के तम को
भगाती हैं बेटियां
इज्जत इन्हीं के हाथ में
रहती हैं सभी की
दोनों जहां की लाज
बचाती हैं बेटियां

पूजा के जलते दीप सी
बाती हैं बेटियां
ममता दिखा के सबको
रिझाती हैं बेटियां
रुकते नहीं हैं पैर
पल भर को जमीं पर
मेहनत की सोंधी गंध
लुटाती हैं बेटियां
गर्मी में ठंडी छांव सी
लगती हैं बेटियां
सर्दी में मीठी धूप सी
लगती हैं बेटियां
वर्षा खुशी की करके
हंसाती हैं सभी को
अनगिन बहारें द्वार पे
लाती हैं बेटियां
अविराम बहें वह धार है
गंगा सी बेटियां
दुनिया जहां की आग भी
सहती हैं बेटियां
पी कर गमों के विष
कभी उफ तक नहीं करें
अमृत सभी को दान में
देती हैं बेटियां
हिरणी कभी बनीं
कभी तुलसी हैं बेटियां
चंचल कदम को बांध लें
रुकती है बेटियां
मीरा कभी बनीं
कभी दुर्गा भी बन गयी
दुश्मन के लिए बन गयी
ये काल बेटियां।

-डॉ. कमलेश रानी अग्रवाल

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर

भगवान महावीर अहिंसा परमो धर्मः के परम उपासक थे, प्राणीमात्र जीना चाहता है। मरना कोई नहीं चाहता, अतः किसी प्राणी की हत्या करना अथवा कष्ट देना यहाँ तक कि मन, वचन व काया से किसी का दिल दुखाना भी हिंसा माना गया है। सर्वज्ञ परमात्मा प्ररूपित जीवन विज्ञान में सूक्ष्मतम जीवों की विस्तार से व्याख्या की गई है व सर्व प्रकार से हिंसा से बचने की प्रेरणा दी गई है, वैसे धर्म का मूल आधार अहिंसा से ही प्रारम्भ होता है।

महान दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन ने धर्म की व्याख्या में कहा है कि धर्म वहाँ है, जहाँ हिंसा का त्याग व नीति न्याय का अनुसरण होता है। हिंसा अशान्ति की जननी है, हिंसा सदा प्रति हिंसा को जन्म देती है, फलस्वरूप हिंसा का सिलसिला तब तक जारी रहता है जब तक कि हिंसा का प्रतिवाद अहिंसा से न किया जाये, जहां हिंसात्मक गतिविधियें चलती है, वहाँ का वायुमण्डल व परमाणु दूषित हो जाते हैं, वातावरण अशान्त हो जाता है।

महात्मा गांधी अहिंसा के परम उपासक थे व अहिंसात्मक आन्दोलन से ब्रिटिश जैसी शक्तिशाली सत्ता से देश को आजाद किया, उन्हीं की सहपाठी डॉ. एनी बीसेंट जो अहिंसा में आस्था रखती थी, एक बार ट्रेन से शिकागो के पास से रात के समय जब ट्रेन गुजर रही ती, एनी बीसेंट को यकायक बैचेनी व अशान्ति महसूस होने लगी तो वह चौंक गई व जब खिड़की से बाहर देखा तो पता चला कि बहुत बड़े यांत्रिक कत्लखाने के पास से होकर ट्रेन गुजर रही हैं, जहाँ हजारों पशु कटते हैं, वहाँ का दूषित वायु मण्डल ही बैचेनी व अशान्ति का कारण है। प्राणी मात्र जीवन जीने का अभिलाषी है, जब हम किसी को जिन्दगी दे नहीं सकते तब उन्हें मारने का हमें क्या अधिकार है ?

स्वामी विवेकानन्द सर्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने जब अमेरिका गये थे, तब वहाँ के कुछ वैज्ञानिक शिकागो में स्थिति विश्व का सबसे बड़ा यान्त्रिक कत्लखाना दिखाने के लिए स्वामीजी को ले गये जहाँ सैकड़ों पशुओं का यान्त्रिक कत्लखाने में कत्ल होकर ओटोमेटिक सभी अवयव अलग-अलग, खून-मांस हड्डियों आदि का पेकिंग होकर कुछ ही समय में तैयार होकर माल बाहर आ जाता है, इस प्रकार वैज्ञानिक प्रगति का जिक्रजब स्वामीजी से करने लगे तब स्वामीजी ने सहज ही कह दिया कि इस विद्वंसक कार्य को मैं प्रगति नहीं मानता, यदि कटे हुए पशुओं को फिर से जोड़कर दिखाओ तो कुछ कहा जा सकता है, यह सुनते ही वैज्ञानिक स्तब्ध हो गये व अपने को शर्मिंदा महसूस करने लगे। स्वामीजी ने कहा भारतीय संस्कृति में हिंसा को मान्यता नहीं, अहिंसा ही हमारा परम धर्म है। अहिंसा प्रेमी की यह मान्यता रही है, "आत्मवत् सर्व भूतेषु।" सर्व सुखीन भवंतु लोकाः।

-केवलचंद जैन

अध्यक्षीय

मेरी रायपुर यात्रा
छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का गठन

गत ७-८ अप्रैल २००७ को मेरी एवं महामंत्री रामअवतार पोद्दार के साथ रायपुर की यात्रा कई मायनों में महत्वपूर्ण रही। पांच नये प्रांतों में सम्मेलन की शाखाएं स्थापित करने की शृंखला में यह प्रथम सफल पड़ाव था। इसका श्रेय सम्मेलन से वर्षों से जुड़े रायपुर के भूतपूर्व मेयर एवं सफल व्यवसायी श्री सन्तोष अग्रवाल को मुख्य रूप से जाता है।

नये प्रांत-छत्तीसगढ़ के निर्माण एवं रायपुर के राजधानी बनने के उपरान्त इस राज्य में बड़ी तेजी से आर्थिक विकास हुआ है। एक अनुमान के अनुसार छतीसगढ़ में करीब 3 लाख मारवाड़ी बसते हैं जो मुख्यतया लौहा, सीमेन्ट, कपड़ा, गल्ला, आदि व्यवसाय से जुड़े हैं। सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में भी इनकी गहरी पैठ है एवं स्थानीय निवासी के साथ एक अद्‌भुत समरसता परिलक्षित होती है।

नये प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के गठन के लिये नियुक्त संयोजक श्री संतोष अग्रवाल के अथक प्रयासों से यात्रा के दौरान हमें बड़ी संख्या में समाज बन्धुओं से मिलने एवं बातचीत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बड़ी संख्या में उपस्थित सदस्यों की बैठक में सभी ने खुलकर अपनी बात रखी एवं छत्तीसगढ़ में समाज की स्थिति एवं आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त हुई। रायपुर प्रेस क्लब में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में पत्रकारों से वार्तालाप का अवसर प्राप्त हुआ एवं समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों से इस बात का आश्वासन मिलता है कि मारवाड़ी समाज की राज्य के आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास में भूमिका के प्रति राज्य में गहरी रूचि है।

अन्य प्रांतों की भांति छतीसगढ़ प्रांत के मारवाड़ी समाज को भी मारवाड़ी सम्मेलन से बड़ी अपेक्षाएं हैं। इस ओर प्रांतीय सम्मेलन के नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री बी. एल. जैन एवं उनकी टीम को महात्वपूर्ण भूमिका निभानी है। मुझे पूरा विश्वास है कि *छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन* प्रांत के मारवाड़ी भाई-बहनों की आशाओं के अनुरूप विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य-समाज सुधार, समरसता एवं समाज के आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं सर्वांगीण विकास के लिये सफलतापूर्वक कार्य करेगा।

एक ओर जहां प्रांतीय सम्मेलन समाज की बदलती नयी तस्वीर को प्रस्तुत करने का कार्य करेगा वहीं समाज में फैली कुरीतियों-दिखावा, आडम्बर, फिजुलखर्ची, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, बड़ों के प्रति सम्मान में कमी, आदि जैसे समाज सुधार के कार्यक्रम भी हाथ में लेगा। समाज में राजनैतिक चेतना का विकास, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के लिये जरूरतमन्द मेधावी छात्रों को आर्थिक सहायता में भी प्रांत की महत्वपूर्ण भूमिका अपेक्षित है।

सम्मेलन की 11 वीं प्रांतीय शाखा *छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन* के जन्म पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं :-

आपका

सीताराम

(सीताराम शर्मा)

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

राजनैतिक चेतना जगाने का बिगुल

नारायण जैन

राजस्थान, गुजरात व अन्य राज्यों के लाखों लोग प. बंगाल में अभी रह रहे हैं तथा अधिकांश लोगों ने यहां के व्यवसाय की बागडोर संभाल रखी है। कई लोग सर्विस में भी हैं, वहां भी उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से अपना वर्चस्व कायम किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्थिक गतिविधियों में राजस्थानी व गुजराती प्रवासियों का योगदान स्पष्ट है। साथ ही शैक्षणिक व चिकित्सीय संस्थानों की स्थापना व उन्हें सुचारू रूप से चलाने में भी इन प्रवासी भाईयों ने सराहनीय योगदान दिया है।

लेकिन राजनीति के क्षेत्र में व्यवसायी समाज के लोगों की प. बंगाल में जो सक्रिय भूमिका होनी चाहिए, उसका नितान्त अभाव महसूस किया जा रहा है। स्वतन्त्रता के पश्चात् पश्चिम बंगाल में सर्वश्री विजय सिंह नाहर, ईश्वरदास जालान, रामकृष्ण सरावगी, देवकीनंदन पोद्दार, राजेश खेतान, सन्तोष बागड़ोदिया, सरला माहेश्वरी, सत्यनारायण बजाज जैसे लोगों का ही नाम हमारे सामने आता है। 2007 के विधान सभा चुनाव में मार्क्सवादी पार्टी ने पूरे राज्य में सिर्फ एक सीट (चौरंगी पर नारायण जैन) पर विधानसभा चुनाव में मनोनीत किया। उसी चुनाव में तृणमूल कांग्रेस द्वारा मनोनीत दिनेश बजाज अभी एक मात्र विधायक राज्य की विधान सभा में है। कांग्रेस ने जोड़ाबागान से सज्जन कुमार सराफ को मनोनीत किया था।

लेकिन, राजस्थानी प्रवासियों की 10 लाख से अधिक रहने वाली आबादी को मद्देनजर रखते हुए क्या हर राजनैतिक दल से हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि कम से कम 10 लोगों को विधानसभा व 5 लोगों को लोकसभा चुनावों में लड़ने के लिये प्रत्याशी के रूप में मनोनयन करें?

हमारी आशा के उपरोक्त पहलू पर राजनैतिक दल राजी हो भी तो प्रश्न है कि क्या चुनाव में भाग लेने के लिये ऐसे प्रत्याशी अपना समाज दे पायेगा?

आज की स्थिति में सकारात्मक उत्तर देना गंभीर व मुश्किल है। लेकिन क्यों न हम राजनैतिक चेतना जगाने का बिगुल बजाकर यह काम अभी से आगे बढ़ायें। इस परिप्रेक्ष्य में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने एक राजनैतिक चेतना उप-समिति का गठन किया है। जिसमें जुगल किशोर जैथलिया व नारायण प्रसाद जैन, क्रमशः अध्यक्ष व संयोजक मनोनीत किये गये हैं। इस समिति द्वारा पहले कदम के रूप में प. बंगाल में 15 अप्रैल, 2007 (रविवार) को कोलकाता में सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें सभी भूतपूर्व व वर्तमान सांसदों, विधायकों व पार्षदों के साथ-साथ मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रान्तीय एवम् जिला स्तर के पदाधिकारियों तथा विभिन्न चुनावों (लोकसभा, विधानसभा) में मान्यता प्राप्त दलों के प्रत्याशियों ने भाग लिया। महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिये विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा गठित उपरोक्त समिति में सीताराम शर्मा व रामअवतार पोद्दार पदेन सदस्य है तथा अन्य सदस्य है-सर्वश्री सांवरमल भीमसरिया, अरुण गुप्ता, ओमप्रकाश पोद्दार, जयगोविन्द इन्दोरिया, मीना पुरोहित, बंशीलाल बाहेती, नवल जोशी, गिरधारीलाल झुंझनवाला, शांतिलाल जैन, विशम्भर नेवर व बाबूलाल दुगड़।

विभिन्न राज्यों में आयोजित किये जाने वाले राजनैतिक चेतना शिविरों के पश्चात् अखिल भारतीय स्तर पर दिल्ली में मारवाड़ी समाज के लोगों को राजनीति में आगे लाने के लिये सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा।

राजनीति में व्यवसायी वर्ग को सक्रिय रहने की दिशा में निम्न बातों पर जोर दिया जायेगा-

1. वोटर लिस्ट में परिवार के सभी बालिग सदस्यों का नाम लिखायें।

2. वोटर आईडेन्डिटी कार्ड सभी परिवारजनों का ले लेंवे।

3. हर चुनाव में परिवार का हर मतदाता, महिलाओं सहित निश्चित रूप से अपने मताधिकार का प्रयोग करें।

4. समाज के युवा वर्ग को चुनाव के समय सक्रिय करें।

5. जिन लोगों का पता (Address) में परिवर्तन हुआ हो तो चुनाव विभाग को समुचित सूचना दें तथा पुरानी जगह पर वोट सरेंडर करके नये मतदान केन्द्र के अनुसार वोटर लिस्ट में अपना नाम लिखवायें।

6. **'पैसा सब कुछ है'**-यह विचाराधारा मन से त्यागें। आज की वास्तविकता के मद्देनजर राजनीति के प्रभाव को यथार्थ के रूप में समझें। चाहे राज्य सरकार से आपका काम है या नगर निगम से या पुलिस विभाग से, सभी जगह काम पड़ने पर आमतौर पर हम लोग "Source" यानि प्रभावशाली आदमी की तलाश करते हैं। अपने ही समाज के अधिक लोग राजनीति में सक्रिय होंगे, तो अपेक्षाकृत आसानी होगी।

7. **व्यवसायी वर्ग का अपेक्षित सम्मान** -सिर्फ व्यापार व पैसे से व्यवसायी वर्ग को अपना अपेक्षित सम्मान मिल पायेगा, यह बात आंशिक सच है लेकिन पूरी नहीं। साथ में राजनैतिक सक्रियता का मेल हो जाये तो व्यापारी वर्ग को अपेक्षित सम्मान दिलाने में अधिक आसानी होगी। पुराने, आऊटडेटेड कानूनों को समाप्त करने पर विचार किया जा सकेगा। व्यापारियों पर लागू विभिन्न लाइसेंसों व औपचारिकताओं में भी कमी लाई जा सकेगी। अर्थात् जीवन में अपेक्षित सम्मान व व्यापार करने में सरलता के लिये आवश्यक है, राजनीति में सक्रिय भागीदारी।

राजनीति में महिलाओं व लड़कियों को भी आगे आने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। आज के समाज में लड़कियां पढ़ाई में काफी अव्वल सिद्ध हो रही है, उनका विधानसभा व संसद में प्रतिनिधित्व देश के लिये शुभ होगा। संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सुरक्षित किये जाने की शीघ्र संभावना है।

आइये, राजनैतिक सक्रियता के लिये अपने अधिकारों का उपयोग करें और कुछ समय का योगदान समाज को नेतृत्व प्रदान करने में भी करें। ●

पश्चिम बंगाल की राजनीति में मारवाड़ी

सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष-अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

संभवत: अधिकांश लोग इस तथ्य से अपरिचित है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की 1935 में स्थापना के पीछे मुख्य प्रेरणा एवं कारण राजनैतिक था। 1935 के भारत विधेयक में नवीन विधान की रूप रेखा में ऐसा संकेत दिया गया था "**जो देशी राज्यों की प्रजा है उसे ब्रिटिश राज्य की प्रजा के नागरिक अधिकार नहीं दिये जायेंगे**"। इस प्रावधान ने आशंका को जन्म दिया कि मारवाड़ी समाज के व्यक्ति जो विभिन्न प्रदेशों में बसे हुए हैं उन्हें देशी राज्यों की प्रजा मानकर यदि नागरिक अधिकार नहीं प्राप्त हुए तो ये देश भर में विदेशियों की तरह समझे जायेंगे। ऐसा होने से न तो उनको वोट का अधिकार होगा और न कोई नागरिक अधिकार। **स्व० श्री ईश्वरदास जालान ने स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए श्री बद्रीदास गोयनका, श्री धनश्यामदास बिड़ला, देवीप्रसाद खेतान, रामदेव चोखानी, मदन मोहन मालवीय** आदि से विचार विमर्श किया एवं उस समय के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर सर एन. एम. सरकार को विलायत भेजकर आवश्यक संशोधन का प्रयास किया गया। भारत के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने संशोधन प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय कहा कि "**मारवाड़ी समाज की कठिनाईयों को दूर करने के लिये यह संशोधन किया जा रहा है।**" इसी के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का जन्म हुआ।

मुहम्मद अली पार्क में दिसम्बर 1935 में आयोजित सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता सनातनीदल के प्रमुख नेता श्री रामदेव चोखानी ने की एवं जहाँ पारित प्रमुख प्रस्ताव में कहा गया "**यह सम्मेलन मारवाड़ी भाईयों से अनुरोध करता है कि वे नागरिक एवं राजनैतिक समस्त देशोन्नति के कार्य में दिलचस्पी लें और उनके चुनाव में सम्मिलित होकर तथा उनमें प्रवेश करके देशवासियों की सेवा करने का सुयोग प्राप्त करें।**"

आज 72 वर्ष उपरांत 2007 में सम्मेलन ने पुन: राजनैतिक चेतना के विकास एवं सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम हाथ में लिया है। मैंने 2006 में अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करते समय भुवनेश्वर में नारा दिया था "**कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बनो**", अर्थात धन के प्रभाव से प्राप्त पद की बजाय जमीन की राजनीति से जुड़कर ताकत प्राप्त करें। इसी संदर्भ में प्रांतीय स्तर पर विभिन्न राज्यों में मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है।

ऐसी बात नहीं है कि मारवाड़ी राजनीति में एकदम सक्रिय नहीं है या उन्हें देश की राजनीति में भाग लेने से कोई परहेज है लेकिन यह बात भी कुछ सीमा तक सत्य है कि राष्ट्र की राजनीति में हमारा जो रूतबा एवं स्थान होना चाहिए वह अभी तक नहीं बन पाया है। एक सोच एवं विचार यह रहा है कि स्वयं राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने की बजाय उन राजनेताओं की सहायता करे जो उनके हितों की रक्षा कर सके एवं उनके प्रश्नों को उठा सके। हम व्यापारी हैं एवं व्यापारिक समाज को सक्रिय राजनीति से दूर रहना चाहिये। इस सोच की वैधता एवं सफलता के विषय में नये सवाल खड़े हुए हैं एवं अब एक परिवर्तन स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। नतीजन समाज में राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। 1950 एवं 1960 के दशकों में समाज के शीर्षस्थ उद्योगपति संसद एवं विधान सभा में गये लेकिन परवर्त्ती काल में एक अभाव दिखायी पड़ा। बिड़ला घराने के श्री कृष्ण कुमार बिड़ला द्वारा लोकसभा के लिये चुनाव लड़ना एक महत्वपूर्ण मोड़ था जिसने इस सोच पर लोगों को सोचने के लिये विवश किया। हाल ही में श्री राहुल बजाज ने भी राज्यसभा के लिए चुनाव लड़ा।

सम्मेलन के 72वें स्थापना दिवस समारोह में उद्घाटन के लिये पधारे **लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी** ने सम्मेलन के राजनैतिक चेतना एवं सक्रिय भागीदारी के आह्वान का जोरदार समर्थन किया। जागरुक, निर्भीक एवं कुशल संगठक एवं वक्ताओं को राजनीति में प्रवेश कर अपनी मेहनत, ईमानदारी एवं दक्षता से अपना विशिष्ट पहचान स्थापित करनी चाहिये। प्राय: कहा जाता है कि राजनीति में बहुत गंदगी है। यह कुछ सीमा तक सत्य भी है। लेकिन अगर सभी अच्छे एवं साफ छवि के व्यक्ति राजनीति से परहेज करेंगे तो सिर्फ गंदगी ही रह जायेगी। राजनीति केवल देश की प्रशासन व्यवस्था तक सीमित नहीं है, आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों का निर्धारण उसका एक अहम पहलू है, मारवाड़ी समाज को देश की भावी नीति एवं दिशा निर्धारण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की जरूरत है।

स्वतंत्रता के पूर्व

पश्चिम बंगाल में अपनी बड़ी जनसंख्या और लगभग हर क्षेत्र में अगुवा होने के बावजूद मारवाड़ी राजनीति में हमेशा हाशिये पर ही रहे हैं। इस स्थिति में एक लगातार गिरावट स्पष्ट है। स्वतंत्रता के पूर्व अविभाजित बंगाल की प्रथम विधान सभा (1937-1945) में 5 मारवाड़ी सदस्य थे-प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका (कलकत्ता पश्चिम) ईश्वरदास जालान (इसी क्षेत्र से बाद में निर्वाचित) देवीप्रसाद खेतान (इंडियन चेम्बर ऑफ कामर्स) राय बहादुर मंगतूलाल

तापड़िया (मारवाड़ी एसोशिएशन) तथा आनन्दीलाल पोद्दार (मारवाड़ी एसोशिएशन)। द्वितीय विधान सभा का गठन 1946 में हुआ जिसमें भी मारवाड़ी सदस्यों की संख्या 5 पर ही रही-ईश्वरदास जालान, बसन्तलाल मुरारका, देवीप्रसाद खेतान, आनन्दीलाल पोद्दार एवं नरेन्दर सिंह सिंघी। इस बीच विधान परिषद में जिन्हें मनोनीत किया गया उनमें थे एच. पी. पोद्दार, मंगतूराम जयपुरिया एवं विजय सिंह नाहर।

स्वतंत्रता के उपरान्त

1952 से 2006 के बीच 14 दफा विधानसभा के चुनाव बंगाल में हुए हैं एवं इनमें लगातार मारवाड़ी प्रतिनिधियों में कमी आयी है। 1952 में बसन्तलाल मुरारका, जयनारायण शर्मा, ईश्वरदास जालान, आनन्दीलाल पोद्दार एवं रतमल अग्रवाल सहित 5 उम्मीदवार विजयी हुए वहीं 1962 में सिर्फ तीन- आनन्दीलाल पोद्दार, ईश्वरदास जालान एवं विजय सिंह नाहर रह गये।1967 में 280 विधायकों में चार- राजेन्द्र सिंह सिंघी, राजेन्द्र कुमार पोद्दार, ईश्वरदास जालान, एवं विजय सिंह नाहर थे। 1969, 1971 एवं 1972 में श्री देवकीनन्दन पोद्दार, रामकृष्ण सरावगी एवं विजय सिंह नाहर निर्वाचित हुए जबकि 1977 में कोई नहीं। 1982, 1987, 1991 एवं 1996 में केवल दो- देवकीनन्दन पोद्दार एवं राजेश खेतान निर्वाचित हुए। 2001 में केवल श्री सत्यनारायण बजाज। 2006 में 294 की कुल संख्या में एकमात्र मारवाड़ी विधायक श्री दिनेश बजाज है।

संसद सदस्य

बंगाल से लोकसभा में निर्वाचित होने का सौभाग्य 1952 से 2005 के बीच पिछले 50 से अधिक वर्षों में सिर्फ एक मारवाड़ी विजय सिंह नाहर को 1977 में प्राप्त हुआ। हालांकि राज्यसभा में निर्वाचित सदस्यों की संख्या कुछ बेहतर है, बेनीप्रसाद अग्रवाल (1952), पन्नालाल सरावगी (1962), रामकुमार भुवालका (1964), सरला माहेश्वरी (1990)। 1964 से 1990 के 26 वर्षों में कोई भी मारवाड़ी पश्चिम बंगाल विधान सभा से राज्यसभा के लिये निर्वाचित नहीं हुआ।

यह एक तत्य है कि एक तरफ जहां राज्य में मारवाड़ी जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है वहीं राजनीति में प्रतिनिधित्व में कमी आयी है। इसके लिए क्या हमारी सक्रिय राजनीति के प्रति उदासीनता दायी है या समाज में राजनैतिक चेतना का अभाव। राजनैतिक चेतना से तात्पर्य केवल चुनाव में भागीदारी ही नहीं है बल्कि मतदाता सूची में अपने को शामिल कराना, मतदान करना, उम्मीदवारों को प्रोत्साहित एवं समर्थन प्रदान करना, महत्वपूर्ण राजनौतिक प्रश्नों पर जो समाज एवं देश के हितों को प्रभावित करते हैं उनपर अपना मत व्यक्त कर जनमत तैयार करना भी है। राजनैतिक रूप से सचेत एवं जागरुक नागरिक समाज एवं देश को सही ताकत एवं दिशा प्रदान करते हैं। ●

लघु कथा

अशिष्ट शब्दों का दूषित प्रभाव

एक दिन एक दुकानदार के पास एक युवक नौकरी के लिए आया।

"क्या तुम सुवाच्य अक्षर लिख सकते हो?"

"हाँ" उत्तर मिला।

"क्या तुम हिसाब-किताब रखना, जोड़-मिलान लगाना जानते हो?"

"हाँ" वही उत्तर था।

"ठीक, बस मुझे कुछ नहीं पूछना है।" दुकानदार बोला, "बाद में तुम्हें जवाब दूँगा।"

लड़का चला गया। उसे नौकरी नहीं मिली।

किसी ने पूछा- "आप ने इस युवक को क्यों नहीं रखा?"

दुकानदार बोला-"यह युवक ईमानदार और मेहनती है, लेकिन इसने 'महोदय' 'श्रीमान' 'जनाब' जैसे शिष्टतासूचक शब्दों का प्रयोग नहीं सीखा है। व्यापार और दुकानदारों में सर्वशिष्ट शब्दों की अतीव आवश्यकता है। यदि वह मुझसे ही "जी हाँ, श्रीमान्" नहीं कहता है, तो भला मेरे ग्राहकों से शिष्टता का व्यवहार कैसे करेगा? अशिष्ट व्यवहार से तो मेरा व्यापार नष्ट हो जायगा। वैसे अशिष्ट व्यक्ति को नौकरी देना व्यर्थ है।"

बलिदान की भावना

स्वतन्त्रता संग्राम में जुझते हुए राणा प्रताप वन प्रदेश-पर्वतों में अपने छोटे परिवार सहित मारे-मारे फिर रहे थे। एक दिन ऐसी नौबत आ गयी कि खाने के लिए कुछ भी नहीं रहा। अनाज पीसकर उनकी धर्मपत्नी ने जो रोटी बनाई थी, उसे भी वन-विलाव उठा ले गया। छोटी बच्ची भूख से व्याकुल होकर रोने लगी। राणा प्रताप का साहस टूटने लगा। वे इस प्रकार बच्चों को भूख से तड़प कर मरते देखकर विचलित होने लगे। एक बार मन में आया कि शत्रु से संन्धि कर ली जाय और आराम का जीवन जीना शुरु करें। उनकी मुख-मुद्रा गम्भीर विचारधारा में डुबी हुई दिखाई दे रही थी।

रानी को अपने पतिदेव की चिन्ता समझने में देर न लगी। वह स्नेहपूर्वक बोली "नाथ! किस चिन्ता पड़ गये? बच्ची भूख के कारण मर नहीं जाएगी और मर भी जाए तो राष्ट्र के लिए जहां बड़ो-बड़ों का बलिदान हो रहा है उसमें एक बालिका और सही। हम अपने परिवार को अनीति के विरुद्ध संघर्ष के लिए एक आदर्श ईकाई के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें देखकर ही समाज में कष्टों से जूझकर आगे बढ़ने का उत्साह उभरेगा।" ●

मारवाड़ी राजनीति कार्यकर्त्ता सम्मेलन

पश्चिम बंगाल मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन

(१५ अप्रैल २००७, हरियाणा भवन, कोलकाता)

बाएं से दाएं सांसद श्री संतोष बागड़ोदिया, सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा, सन्मार्ग के संचालक व सम्पादक श्री रामअवतार गुप्ता, पूर्व सांसद श्रीमती सरला माहेश्वरी, पूर्व विधायक श्री सत्यनारायण बजाज, विधायक श्री दिनेश बजाज, सम्मेलन के महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार व श्री नारायण जैन संयोजक।

▸▸ राजनीति संख्या का खेल

: सांसद संतोष बागड़ोदिया

कोलकाता-रविवार, 15 अप्रैल 2007: मारवाड़ी समाज में राजनैतिक चेतना के विकास हेतु, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं पश्चिम बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त तत्वाधान में कोलकाता के 'हरियाणा भवन' में एक दिवसीय पश्चिम बंगाल मारवाड़ी, राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया।

उद्घाटनकर्त्ता श्री रामअवतार गुप्ता, सम्पादक, 'सन्मार्ग' एवं सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा पश्चिम बंग मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन में गणेश पूजन करते हुए। साथ में परिलक्षित हैं महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, राजनैतिक चेतना उप समिति के अध्यक्ष श्री जुगल किशोर जैथलिया एवं संयुक्त मंत्री श्री रविन्द्र कुमार लड़िया।

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

मारवाड़ी राजनीति कार्यकर्त्ता सम्मेलन

समाज में नेतृत्व नहीं, राजनीति में कैसे हो?

– राम अवतार गुप्ता, सम्पादक 'सन्मार्ग'

इस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए **हिन्दी दैनिक सन्मार्ग** के संपादक-संचालक श्री रामअवतार गुप्ता ने अपने भाषण में कहा कि सम्मेलन ने 72 सालों के बीच कई बार क्रान्तकारी निर्णय लिए, उस समय के लिए निर्णय, आज भी प्रसांगिक है, बैण्डबाजा का जिक्र करते हुए, उन्होंने कहा कि वर्षों पूर्व लिया गया निर्णय आज भी लागू है। परन्तु साथ ही कई बातों में विकृतियाँ बहुत बढ़ गई है। समाज में नेतृत्व का अभाव हमेशा बना हुआ है। **समाज में एकता और नेतृत्व की कमी से राजनीति में हमारी स्थिति दयनीय है।**

पूर्व विधायक श्री सत्यनारायण बजाज

उन्होंने सम्मेलन के इस प्रयास को एक सफल कदम बताते हुए कहा कि उनका समाचार पत्र सार्थक कार्य के साथ हर तरह से रहेगा। उद्घाटन सत्र के ठीक पूर्व मंच पर आसीन सभी अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत् किया गया।

स्वागत भाषण :

स्वागत् समिति के अध्यक्ष व विधायक श्री दिनेश बजाज ने अपने भाषण में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि, पश्चिम बंगाल में मारवाड़ी समाज का राजनैतिक इतिहास सन् 1925 से मिलता है। 1947 में श्री ईश्वर दास जालान स्पीकर बने, वे प. बंगाल सरकार में मंत्री भी रहे। श्री रामकुमार भुवालका, श्री देवी प्रसादजी खेतान आदि का जिक्र करते हुए एक लम्बी सूची पेश की। साथ ही साथ मारवाड़ी एसोसीयेशन का अलग से प्रतिनिधित्व था। राजनीति में अपना विशेष महत्व रखने के बावजूद आज इस समाज को इस

पूर्व सांसद श्रीमती सरला माहेश्वरी

कार्यक्रम की क्या जरूरत पड़ी, **यह सोचने की बात है कि क्यों नहीं हमारे समाज का कोई व्यक्ति किसी राजनैतिक दल का अध्यक्ष बन पाता। हमारे कार्यक्रम की सार्थकता तब है जब हम सब एक होकर अपनों को साथ दें।**

अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने इस अवसर पर अपने भुवनेश्वर अधिवेशन में किये वादे का जिक्र करते हुए कहा कि मारवाड़ी कोषाध्यक्ष की जगह अध्यक्ष बनने की पहल करें। आपने

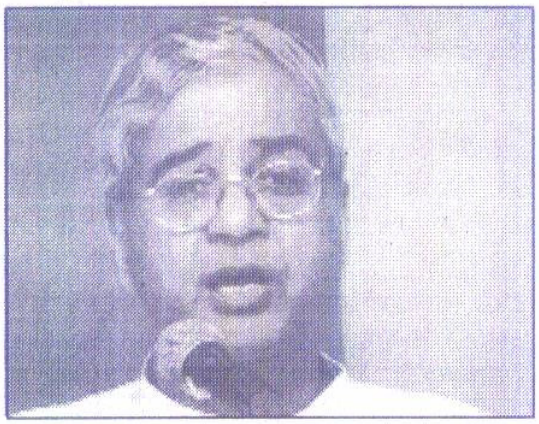

सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम शर्मा

श्री महावीर प्रसाद नारसरिया एवं श्री दीपचन्द जी नाहटा के लम्बे समय तक सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यों का विशेष रुप से स्मरण करते हुए सभी उपस्थित लोगों से उनका स्वागत करने का अनुरोध

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

मारवाड़ी कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बनें

- सम्मेलन सभापति सीताराम शर्मा

विधायक श्री दिनेश बजाज

किया। अपने स्वागत भाषण में सम्मेलन के इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि सम्मेलन की स्थापना के पीछे भी राजनैतिक कारण था। 1935 में सम्मेलन जब आरम्भ हुआ, मोहम्मद अली पार्क में श्री रामदेव जी चोखानी ने आह्वान किया था कि समाज

पूर्व पार्षद श्री सांवरमल भीमसरिया

राजनीति में सक्रिय भूमिका निभायें।

आज वक्त की जरूरत है कि हमें भी राजनीतिक शक्ति को संगठित करना होगा। इस प्रयास में बंगाल में पहला यह आयोजन किया गया है। आगे यह कार्य अन्य प्रान्तों में जारी रहेगा और अन्त में नवम्बर-दिसम्बर के आस-पास इसे राष्ट्रीय स्वरूप दिया जायेगा। जिसमें सारे देश से चुने हुए समाज के राजनैतिक कार्यकर्ताओं का सम्मेलन आयोजित किया जा सकेगा, हमारा यह प्रयास रहेगा कि उस समय तक देश भर से प्राय: सभी राज्यों के आंकड़े हमारे पास उपलब्ध हो जाएं। ताकि अधिक से अधिक संख्या में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। पश्चिम बंगाल का जिक्र करते हुए आपने कहा कि यहाँ पर हमारी राजनैतिक स्थिति सोचनीय है, 1960 से 1990 तक हमारा कोई प्रतिनिधि यहां से राज्यसभा में नहीं चुना गया। 1990 में एकमात्र श्रीमती सरला माहेश्वरी को मनोनीत किया

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री शिशिर बाजोरिया

गया। विधायक भी महज आज एक ही रह गया है।

सम्मेलन की भूमिका को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि समाज को विभिन्न दलों में अपनी भागीदारी निभानी चाहिये। सम्मेलन की सोच है कि समाज इसमें अपनी सक्रिय हिस्सेदारी निभायें। इस कार्यक्रम के माध्यम से हम यह संदेश नहीं दे रहे कि सबलोग राजनीति में लग जायँ, हाँ जो लोग इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, उनका मनोबल ऊंचा हो सके। समाज अपने मत के महत्व को समझे, मतदान के समय अपना मत का प्रयोग जरुर करने जैसी छोटी-छोटी बातों को भी समाज महत्व दें। पुन: उन्होंने एक बार सम्मेलन की तरफ से स्पष्ट किया कि, जो लोग जिस भी विचारधारा से संबंध रखते हों वे उस विचारधारा वाली राजनीति दल में अपनी सक्रिय भागीदारी निभायें।

सांसद श्री संतोष बागड़ोदिया

इस अवसर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सांसद श्री संतोष बागड़ोदिया ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए राजस्थानी में अपना भाषण

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

अपनी विचारधारा के अनुसार राजनीति करे

– पूर्व सांसद सरला माहेश्वरी

दिया। भागीरथ कानोड़िया, सीताराम सेकसरिया को स्मरण करते हुए कहा कि "**आज समाज में ही सामाजिक नेतावां की कमी**

श्री जुगल किशोर जैथलिया

है, राजनीति में कठे से आवेगा। समाज का भला के लिए परिवार को नुकसान, देश का भला खातिर समाज को, और मानव जातिरी भला तायीं देश के नुकसान उठाने में आपाने हिचकनो नैड़ चाइजै।" हमारे आचरण में वही बात आनी चाहिये,

महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार

जो हमारे मन में है। राजनीति के नम्बर गेम का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए समाज को आगाह किया कि वे इसमें काफी पिछड़ चुके हैं। उनको इस ओर ध्यान देना होगा। एकजुट होकर काम करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि हमें यह भी ध्यान देना होगा कि हम कहां से कमजोर हैं। समाज को वोटर लिस्ट में अपना नाम जरुर से दर्ज कराना चाहिए आगे उन्होंने कहा कि "**राजनैतिक ताकत कोई देता नहीं, प्राप्त की जाती है।**"

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पूर्व सांसद)

मुख्य वक्ता श्रीमती सरला माहेश्वरी ने कहा कि हम विभिन्न विचारधाराओं के लोग आज इस बैनर के नीचे एकत्रित हुए और दिन भर से समाज के विषय पर बाते कर रहे हैं यह अपने आप में ही सबसे बड़ी सफलता है। इन्होंने कहा कि हम अपने विचारधारा

पूर्व पार्षद श्री ओम प्रकाश पोद्दार

के अनुसार वोट करते हैं। न कि किसी समुदाय या जाति के आधार पर, **समाज राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभायें, न कि सिर्फ पार्षद, विधायक, या सांसद बनने के लिये राजनीति करें। मारवाड़ी समाज को इसमें सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये। हमारी प्रतिबद्धता मानवता के प्रति होनी चाहिये।**

श्री सत्यनारायण बजाज (पूर्व विधायक)

कोलकाता के पूर्व विधायक श्री सत्यनारायणजी बजाज ने अपने पुराने अनुभवों को सभागार में बाँटते हुए कहा कि समाज में राजनैतिक चेतना जगानी होगी। यह आवश्यक ही नहीं बल्कि इसके सिवाय हमारे सामने दूसरा विकल्प भी नहीं है। **हमें समाज को एकजुट कर राजनीति में आगे आना होगा, हमारे वोटों को एकत्रित ताकत के रूप में प्रयोग करना होगा, तभी हम राजनीति के माध्यम से देश की सही रूप से सेवा कर सकेगें।**

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

मारवाड़ी राजनैतिक रूप से सचेत हो

- पूर्व विधायक सत्यनारायण बजाज

श्रीमती सुमन गुप्ता

वर्त्तमान राजनैतिक परिदृश्य एवं संभावनाए सत्र

उद्घाटन सत्र के पश्चात **''वर्त्तमान राजनैतिक परिदृश्य एवं संभावनाएं''** विषय पर प्रथम विचार सत्र हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री जुगल किशोर जैथलिया ने की एवं विषय प्रवर्त्तन पूर्व पार्षद श्री सांवरमल भीमसरिया ने किया तथा अनेक प्रतिनिधियों ने इस पर अपने विचार रखें-

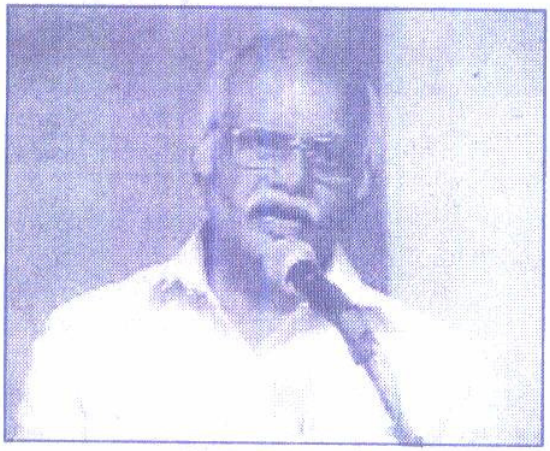

श्री हरि प्रसाद कानोड़िया

श्री दुर्गा प्रसाद नाथानी (पूर्व पार्षद) :

कार्यकर्त्ता राजनीति में एक मिशन लेकर कार्य करें। हममें से अनेक लोग अलग-अलग विचारधारा के दलों में कार्यकर्त्ता हो सकते हैं, परन्तु जब हमें मारवाड़ी के नाम पे हमारे साथ अन्याय होता है, तब हमें सोचने पर मजबूर होना पड़ता है। इस क्षेत्र में दोहरेपन के व्यवहार को समाप्त करने के लिए समाज को सक्रियता से कार्य करने पर बल देना होगा, कार्यकर्त्ता के मनोबल को और मजबूत करना होगा।

श्री नागरमल बाजोरिया (धरती पकड़) : हर नवजवान को

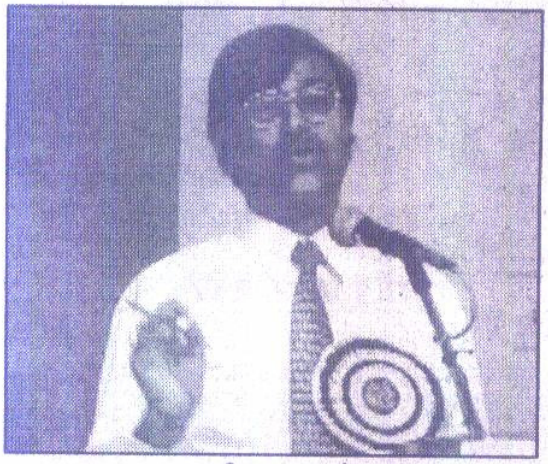

श्री नारायण जैन

चाहिए कि वे राजनीति में आवें। जीतों चाहे हारो, नेता बनकर बोलना सीखो।

श्री विनोद अग्रवाल (राजमहल): यह ऐतिहासिक निर्णय है, बंगला नववर्ष की शुभकामना देते हुए कहे कि राजनीति में हम सफल रहेंगे क्योंकि हमारे पास चरित्र है, सेवा की भावना है, और देश प्रेम है।

प्रथम तकनीकी सत्र की समाप्ति पर सत्र के अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने एकजुट होकर समाज को अपनी शक्ति दिखाने का आह्वान करते हुए **कवि शिव ओम अम्बर** की दो पंक्तियों के माध्यम से अपनी बात रखी-

''जो लोग समय का नाग नाथते हैं, वृन्दावन उनके पीछे चलता है,
गोवर्द्धन धारण कराने वालों का, सारा जग अभिनन्दन करता है।''

मिलनी सबकी चार रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।

बंगाल की राजनीति में मारवाड़ियों की स्थिति दयनीय

– विधायक दिनेश बजाज

पूर्व पार्षद श्री दुर्गा प्रसाद नाथानी

उद्योग एवं राजनीति सत्र

दूसरे विचार सत्र का विषय था ''उद्योग एवं राजनीति'' जिसकी अध्यक्षता उद्योगपति एवं राजनीतिक पर्यवेक्षक श्री शिशिर बाजोरिया

श्री महावीर प्रसाद नारसरिया

ने की एवं विषय प्रवर्तन किया पूर्व पार्षद श्री ओमप्रकाश पोद्दार ने

श्री ओमप्रकाश पोद्दार (कोलकाता) : कहा कि बनिया का बेटा काम धन्धा करे कि राजनीति, मैंने इस द्वन्द का सामना किया है, इसके बावजूद मैंने राजनीति में भाग लिया, चुनाव लड़ा, यह बात सही है कि हमारा समाज मुख्यरूप से व्यापारी है और राजनीति में गंदगी है, इन दोनों बातें में कोई मेल नहीं बैठता है। साथ ही हमारे समाज की यह धारणा रही है कि व्यवसायिक हितों की रक्षा के लिये राजनीतिज्ञ बनने की नहीं वरण राजनीतिज्ञों के सहयोग की जरूरत है। यह हमारी सबसे बड़ी भूल धारणा है, **धन के प्रभाव से एक व्यापारी का काम हो सकता है, परन्तु समाज का नहीं हो सकता, यह बात समाज को समझ लेनी चाहिये।** अपने समाज का कोई नेता ही अपने समाज के दर्द को समझ सकता है। यह दो पीढ़ियों के सोच का फर्क हो सकता है पहले समाज को सोच कुछ और थी, परन्तु आज का युवावर्ग सीधे राजनीति से जुड़ना चाहता

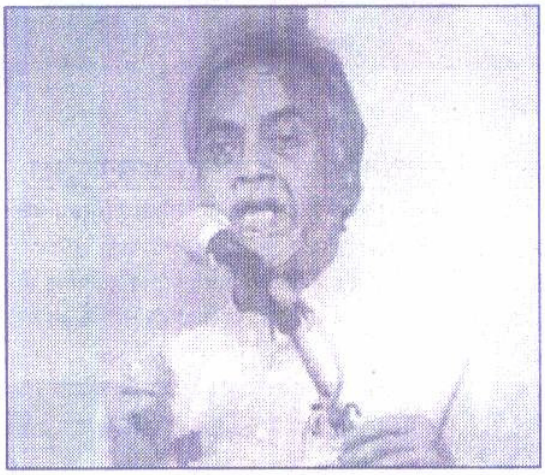

श्री विनोद अग्रवाल, झारखंड

है। यह बात कभी रही थी कि उद्योग और राजनीति में 36 का आंकड़ा रहता था, परन्तु आज यह अंक 63 का हो चुका है।

श्री सावरमल भीमसरिया (पूर्व पार्षद): ने कहा कि मारवाड़ी राजनीति में आने से पूर्व अपनी स्थिति का आंकलन करें, इन तत्वों को चिन्हित करके गदर किनार करें, जो सिर्फ पैसों के बल पर मारवाड़ी समाज की छवि को धूमिल कर रहें हैं।

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया : (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

सम्मेलन के लोगो पर लिखे स्लोगन पर ध्यान दिलाते हुए कहा कि : ''**म्हारो लक्ष्य-राष्ट्र री प्रगति**'' हम मारवाड़ी हैं, हमारे पुराने

विवाह में सादगी बरतें।

मारवाड़ी राजनीति कार्यकर्त्ता सम्मेलन

लोग परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी रूप से राजनीति से जुड़े हुए हैं परन्तु आज वक्त की मांग है कि हम समाज के युवकों

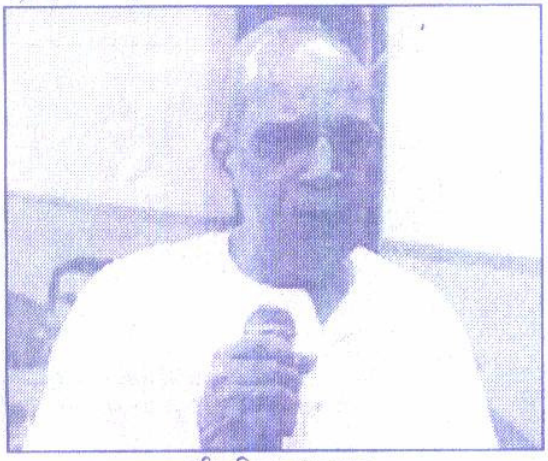

श्री हरिराम जालुका

को इस दिशा में आने के लिए उत्साहित करें।'

श्री शिशिर बाजोरिया :

व्यापार और राजनीति के बीच गहरा संबंध है, हां हम मानते हैं कि सब व्यापारी राजनीतिज्ञ नहीं हो सकते परन्तु जो व्यापारी राजनीति में जाना चाहते हैं उसका उत्साह बढ़ाना चाहिये। जैसा कि अभी हरिप्रसाद कानोड़िया जी ने कहा-मैं उनकी बातों का पक्षधर हूँ।

श्री अरुण गुप्ता

मुद्रास्फिति व अन्य की विषयों पर अपने सुलझे हुए विचारों से सभा का दिल मोह लिये। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए आपने कहा कि अपने समाज के कुछ लोगों का मानना है कि राजनीति गंदी है, यह सोच हमें बदलनी होगी। अच्छे लोग यदि यह सोचकर जाता है, जो लोग सक्रिय राजनीति में नहीं जाना चाहते वे कम से कम अपना वोट तो जरुर से जरुर डालें।

श्री गोपाल अग्रवाल : उद्योगपति को किसी भी राजनीति में नहीं आना चाहिए। मेरा विचार है कि उद्योग के साथ-साथ जो लोग राजनीति करेगें, तो उसको एक साथ कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। दोनों कभी भी एक साथ नहीं किया जा सकता है।

श्री रामगोपाल डोलिया : हम जब चुनाव लड़ते हैं उस समय हम समाज के पास जाते हैं तो उनका व्यवहार अपमानजनक होता है, मेरी समाज से अपील रहेगी कि वे किसी भी समाज के छोटे-बड़े राजनैतिज्ञ कार्यकर्ता को कम से कम अपमानित तो न करें इसीसे हमलोगों का मनोबल ऊंचा हो जायेगा।

श्री लोकनाथ डोकानिया, अध्यक्ष, प.बं. मा.सम्मेलन

श्री विश्वनाथ सिंघानिया : ने कहा कि हारे हुए कार्यकर्त्ता का भी उत्साह वर्धन किया जाना चाहिये। ताकि वह पुनः चुनाव में खड़ा हो सके।

महिला एवं युवा भागीदारी सत्र

''**महिला एवं युवा भागीदारी**'' विषय पर तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्रीमती सुमन गुप्ता ने की एवं प्रो. नारायण प्रसाद जैन ने विषय प्रवर्तन किया।

श्रीमती कुसुम लूडिंया : समाज की महिलाओं को चाहिए कि वे परिवार सदस्यों के नाम वोटरलिस्ट में डलाने में अपनी भागीदारी निभायें।

सुश्री राजप्रभा दसानी : समाज की महिलाओं में राजनीति के

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

मारवाड़ी राजनीति कार्यकर्त्ता सम्मेलन

प्रति जागरुकता लाने पर बल देते हुए कहा कि समाज की महिलाएं कई क्षेत्रों में काफी आगे आई है, अब उसे इस क्षेत्र में भी आगे आना चाहिये।

पत्रकार सुश्री राजप्रभा दसानी

श्री दीपक जैन : राजनीति के कई आयाम है, वोट देना भी इसका सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है।

श्री रतन साह : लोकतंत्र के नाम से जनता को जिस प्रकार मूर्ख बनाया जाता है, इसे जनता के सामने लाना होगा। आपने चुनाव में मतदान की प्रक्रिया पर कई सवाल खड़े किये, साथ ही समाज को राजनीति में आगे आकर काम करने का आह्वान किया।

श्री अरुण गुप्ता : सम्मेलन के इस कार्यक्रम की सफलता पर बोलते हुए कहा कि आज यह हमारे लिए उत्साहवर्धक है कि सुबह से प्रायः सभी राजनैतिज्ञ दलों के लोग एक मंच पर एकत्रित होकर बातें कर रहे हैं।

श्री बंशीलाल बाहेती : हम आशावादी कम आशंकावादी अधिक हैं इस मानसिकता से ग्रसित हमारे समाज को इससे उपर उठना होगा।

श्री रामगोपाल ड्रोलिया, मंत्री राजनैतिक चेतना समिति, बिहार बोलते हुए

श्री जुगलकिशोर जैथलिया : ने अपने समापन भाषण में कहा कि यह तलपट मिलाने का समय नहीं, यह राजनैतिक चुनौती को स्वीकार करने का समय है, इस चुनौती को स्वीकार करने की क्षमता समाज में है, अतः ऐसे लोगों को हम चयन करें जिन्होंने संकल्प लिया है, जो समाज को राजनैतिक क्षेत्र में स्थापित करने की क्षमता रखते हों।

श्री नारायण जैन (संचालक) : चुनाव के समय के अपने अनुभवों को बांटते हुए आपने बताया कि, किस तरह से समाज के लोगों की सोच है, हर बात पैसे से नहीं तौली जा सकती है, यह बात समाज को सोचना ही होगा। चुनाव के समय, महिलाओं व युवावर्ग को और सहभागिता पर आपने जोर देकर कहा कि चुनाव के समय इनकी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

अधिवक्ता श्रीमती कुसुम लूंडिया

इस कार्यक्रम में अच्छी संख्या में राजनीति कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। प. बं. मा. सम्मेलन के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया, श्री विजय ओझा ने भी अपने विचार रखे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में के अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथेलिया, एवं राजनैतिक चेतना उपसमिति के संयोजक श्री नारायण जैन ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सम्मेलन के महामंत्री श्री रामवतार पोद्दार, उपमहामंत्री-द्वय श्री अरुण गुप्ता, श्री रविन्द्र कुमार लड्ढिया के अलावा श्री नन्दलाल सिंघानियां, श्री राजकुमार बोथरा, श्री हरिराम जालुका, श्री आत्माराम सोथलिया, श्री घनश्याम बेरीवाल, श्री विश्वनाथ कहनानी, श्री अरुण माहेश्वरी, श्री सीताराम अग्रवाल, श्रीनथमल टिबड़ेवाल, अध्यक्ष बिहार प्रा. मा. सम्मेलन, श्री रामगोपाल ड्रोलिया, मंत्री राजनैतिक चेतना समिति, बिहार, श्री विश्वनाथ सुल्तानिया, विमला डोकानिया, श्री प्रकाश चण्डालिया, श्री सुशील ओझा, श्री जयकुमार इन्दोरिया, श्री रतनलाल सोनी, श्री अरुण मल्हावत,के अलावा काफी संख्या में समाज के लोगों ने भाग लिया। सम्मेलन के महामंत्री श्री रामवतार पोद्दार ने सभी को धन्यवाद दिया, विशेषकर **हरियाणा भवन** के पदाधिकारियों को जिन्होंने इस आयोजन को करने के लिए भवन निःशुल्क उपलब्ध कराया। ●

जुबान की कीमत, मारवाड़ की हकीकत।

मारवाड़ी राजनीतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन

समाचारपत्रों की एक झलक

विवाह में सादगी बरतें।

संकीर्णता से उबर कर आदर्शोन्मुख राजनीति करें मारवाड़ी

सावरमल भीमसरिया

स्वातन्त्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत् में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे!
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

सम्प्रति मारवाड़ी समाज के लोगों को अधिक से अधिक संख्या में राजनीति में आने एवं अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संगठित आंदोलनों की शुरुआत करने की अपील के साथ प्रवासी मारवाड़ियों की प्रतिनिधि राष्ट्रीय संस्था **अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन** ने नये सिरे से पहल की है और कुछ कार्यक्रम हाथ में लिए हैं जो स्वागत योग्य है।

भारतीय राजनीति के वर्तमान स्वरूप में वही समाज अपने अधिकारों को प्राप्त कर पाने में सक्षम हो सकता है जो 'वोट बैंक' के रूप में चिन्हित हो।

'वोट बैंक' वही समाज हो सकता है जो एक हो और सामूहिक रूप से किसी मुद्दे पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने में सक्षम हो। 'वोट बैंक' के रूप में चिह्नित समाज को हर राजनीतिक दल प्राथमिकता देता है और उसकी मांगों पर गहराई से विचार करता है।

मारवाड़ी समाज की जब बात करते हैं तो पाते हैं कि यह समाज भले ही पूरेदेश में फैला हुआ है लेकिन यह एकजुट नहीं है। इस समाज के विभिन्न धड़े आपस में बंटे हुए हैं और किसी भी मुद्दे पर आम सहमति बना पाने में अक्षम है।

ऐसा नहीं है कि मारवाड़ी समाज के लोग राजनीति में नहीं हैं। हैं, लेकिन मारवाड़ी समाज को लेकर उनके मन में कोई विचार नहीं है। वे आम राजनीति के दलदल में इस कदर धंसे हैं कि उससे उबर कर मारवाड़ी समाज के विषय में सोचने का वक्त भी उनके पास नहीं है।

अतीत में मारवाड़ी राजनीतिज्ञों का आकलन करें तो पाएंगे कि राजनीति करते हुए भी उनके मन में कहीं न कहीं समाज के लिए चिंता थी और अपनी इस चिन्ता को वे सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते थे समाज को उन्नत एवं आधुनिक बनाने के लिए अपने स्तर पर पूरी कोशिश करते थे। इसका सबसे सशक्त उदाहरण अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना।

सम्मेलन के पुरोधा स्व. ईश्वर दास जी जालान कांग्रेस दल के विशिष्ट नेता थे। पश्चिम बंगाल विधानसभा के सदस्य ही नहीं राज्य के कानून मंत्री तथा विधानसभाध्यक्ष तक के पद को उन्होंने सुशोभित किया था पर इससे पृथक मारवाड़ी समाज के लिए वे समर्पित थे। समाज के सामयिक परिस्थितियों को लेकर उनके मन में चिन्तन चलता रहता था। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना के पीछे राजनीतिक कारण था और एकीकृत रूप से उसका सामना किया गया। सम्मेलन की सामाजिक भूमिका तो बाद में बनी।

राजनीति और समाज या समाज और राजनीति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं चल सकते और यदि दोनों का सम्मिश्रण किसी बड़े उद्देश्य के लिए ठीक से किया जाय तो सोने पर सुहागा हो सकता है।

आज भारतीय राजनीति में अच्छे लोगों की बड़ी कमी है। राजनीति का अपराधीकरण एवं साथ ही व्यवसायीकरण एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आई है। परिस्थिति यह है कि हर राजनेता जनता की निगाह में शक के घेरे में हैं।

पिछले वर्षों में जिस तरह खूंखार अपराधियों का राजनीति की मुख्यधारा में प्रवेश हुआ है और वे स्थानीय निकायों से लेकर संसद तक पहुंचने में कामयाब हुए हैं उसके पीछे सबसे बड़ा कारण यहीहै कि अच्छे लोगों ने राजनीति में दिलचस्पी लेना कम कर दिया है। हर आदमी राजनीति का शुद्धिकरण चाहता है पर अपने को आगे रखने में घबराता है। जब किसी भी समाज और देश में अच्छे लोग सिर्फ इसलिए चुपचाप बैठ जाएं कि उनके करने को कुछ नहीं है तो उस देश और समाज में अराजक तत्वों का हावी होना स्वाभाविक बात है।

मारवाड़ी समाज के लोगों को राजनीति में आने का इससे बेहतर कारण और क्या हो सकता है ?

मारवाड़ी समाज का इतिहास, पूरे देश में इस समाज की उपस्थिति और सामाजिक क्षेत्र में किये गये कार्य के आधार पर इस समाज के लोग राजनीति में आगे आएं तो यह बड़ी उपलब्धि हो सकती है।

मारवाड़ी राजनीति में आए जरूर लेकिन व्यापक दृष्टि, जनभावना और नये आदर्शों की स्थापना के उद्देश्य से। जिस ढर्रे पर देश की राजनीति चल रही है उसी परंपरा को आगे बढ़ाने की मंशा लेकर आने से कोई फायदा नहीं।

अगर मारवाड़ी समाज के लोगों को भारतीय राजनीति में नये आदर्शों की स्थापना करनी है तो संकीर्णता के सारे कारणों को खत्म करने का संकल्प लेना होगा। उन्हें अन्य समाजों में व्याप्त बुराइयों पर झांकने से पहले अपने समाज की बुराईयों पर काबू पानी होगी क्योंकि सम्प्रति मारवाड़ी समाज में भी बहुत सी ऐसी बुराइयां पनपी हैं जो इस समाज की छवि को धूमिल कर रही हैं। विकासोन्मुख, जन्मोन्मुख, सौहार्दोमुन्ख राजनीति को आधार बनाकर मारवाड़ी आगे बढ़े, पूरा देश उनके स्वागत में प्रतीक्षारत है।●

विलास विनाश है।

छत्तीसगढ़ प्रांतीय सम्मेलन का उद्घाटन

७ अप्रैल २००७, रायपुर

- प्रदेशभर से जुटे मारवाड़ी भाई-बहन
- बी.एल. जैन -अध्यक्ष एवं हरिशंकर शर्मा, महामंत्री
- जिलास्तर पर सदस्यता अभियान का

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा का आह्वान

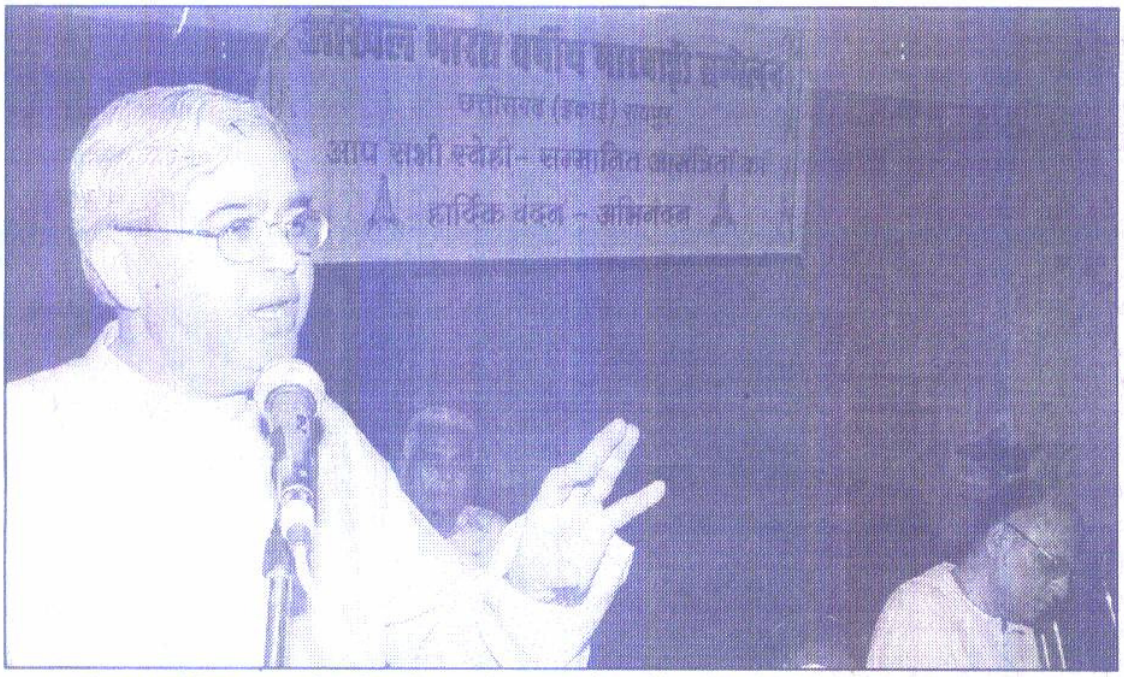

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के गठन हेतु रायपुर में आयोजित संदस्यों की बैठक को संबोधित करते हुए सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम जी शर्मा एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार जी पोद्दार के आगमन पर प्रस्तावित छत्तीसगढ़ इकाई के विभिन्न घटक दलों द्वारा स्नेहिल अभिनन्दन किया गया, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीता राम जी शर्मा के साथ राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार जी पोद्दार तथा छत्तीसगढ़ इकाई के संयोजक श्री संतोष अग्रवाल ने संयुक्त रूप से प्रेस से मिलिये कार्यक्रम में सम्मेलन के मूल उद्देश्यों व भावी कार्यक्रमों से अवगत कराया।

महेश भवन में प्रस्तावित छ. ग. इकाई के अविभाजित मध्य प्रदेश के छ. ग. से संबद्ध सम्मानित सदस्यों के साथ मारवाड़ी

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

छत्तीसगढ़ प्रांत

समुदाय के विभिन्न सभी घटक दलों के पदाधिकारियों और वरिष्ठ नागरिकों ने उपस्थित हो अपनी सक्रिय और सारगर्भित सहभागिता के साथ एक स्वर से संगठन को सुगठित करते हुए सामाजिक,

बैठक में उपस्थित समाज के बन्धुगण।

संस्कारिक और राजनैतिक चेतना को एकमतेन स्वीकारते हुए संगठन के महत्व और वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता को भी अंगीकृत किया।

छत्तीसगढ़ इकाई के गठन के संबंध में आए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम जी शर्मा ने सामाजिक कुरीतियों यथा दहेज, दिखावा, बालिका शिक्षा के अवरोध के साथ-साथ सामाजिक धार्मिक और मांगलिक कार्यों में अपव्यय के संबंध में अपने अनुभव और आंतरिक विचारों को व्यक्त करते हुए इनके समसामयिक निराकरण के दिशा निर्देश देते हुए समय अनुरूप परिवर्तन का आह्वान किया। सम्मेलन के नए सत्र का नारा **''समाज सुधार एवं समरसत्ता''** पर विचार व्यक्त करते हुए वर्तमान में सम्मेलन की 10 प्रांतीय इकाइयों के अतिरिक्त 5 प्रांतीय सम्मेलन की इकाईया गठित करनेका लक्ष्य बताते हुए सामाजिक सुधार हेतु सम्मेलन की विशिष्ट पहचान का उल्लेख करते हुए शिक्षा, साहित्य, कला-संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, खेल-कूद, उद्योग व्यवसाय में सहभागिता कर नई उचाईयां कायम करते हुए समाज की अपयतन तस्वीर प्रस्तुत की।

समरसता के संबंध में प्रवासी मारवाड़ी समाज व घटक दलों द्वारा स्थानीय रूप से भाषा के साथ साथ सभी क्षेत्रों में सामंजस्य स्थापित करते हुए सभी को अपनी भाषा के साथ क्षेत्रीय भाषा, संस्कृति और पर्यावरण को अपनाने का आह्वान किया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शर्मा ने मारवाड़ी सम्मेलन के मूल-भूत तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए कार्य योजनाओं का उल्लेख किया जिसमें राजस्थान साहित्य सृजन एवं युवा साहित्यकारों को सम्मानित करने हेतु पुरस्कार की जानकारी दी, जिनमें अब तक शंकु महाराज, चेतालीचट्टोपाध्याय, ज्योतिर्मय दास, किवर राय, राष्ट्रीयपद चट्टोपाध्याय, शेखर समधर, अहना विश्वास एवं बुद्ध देव राय को पुरस्कृत किया जा चुका है। उद्यम विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का उल्लेख करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया की समाज के साथ-साथ स्थानीय समाज के युवक युवतियों को दिशा बोध और भविष्य में

रायपुर में आयोजित बैठक में उपस्थित समाज के प्रतिनिधि।

अपने जीवन-यानप के उद्देश्य से उद्यम प्रतिभा विकसित करने हेतु अल्पकालिक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के बड़े उद्योगपतियों

जुबान की कीमत, मारवाड़ की हकीकत।

द्वारा प्रस्तावित योगदान की भूमिका स्पष्ट की।

राजनैतिक चेतना एवं उच्च शिक्षा-न्यास के गठन के संबंध में उन्होंने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किये। आयोजित बैठक में मारवाड़ी समाज के प्रतिष्ठित सहभागियों ने भी सम्मेलन को सुगठित करने एवं सामाजिक विकास की दिशा में अपने विचार व्यक्त किये। इस संबंध में इंदरचंद धाड़ीवाल, गनपतराय मंत्री, भिलाई, रामजी लाल जी अग्रवाल, हरप्रसाद अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, राज कुमार जैन, अशोक अग्रवाल, सोहनलाल डागा, श्रीमती पद्मा सिंघानियां, रमेश सिंघानिया ने अपने विचार व्यक्त किये। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत डॉ. डी. एन. अग्रवाल, लूनकरण पारख, रामानंद जी अग्रवाल, ओम प्रकाश अग्रवाल, अशोक सुराना, डॉ. अरुण हरितवाल, ललित सिंघानिया, मोहन लाल जी खण्डेलवाल, डॉ. सुरेश अगरवाल ओमप्रकाश जी डागा, महावीर जिंदल, राजीव अग्रवाल, प्रज्ञा राठी, रामावतार अग्रवाल, सुभाष

बैठक को संबोधित करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार।

प्रेस क्लब रायपुर में संवाददाता सम्मेलन

मारवाड़ी सम्मेलन का छत्तीसगढ़ प्रांतीय इकाई का गठन 7 अप्रैल को रायपुर के महेश भवन में छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का गठन किया गया। समाज सुधार के उद्देश्य को लेकर संगठन ने शादी-ब्याह में होने वाले खर्च पर रोक लगाने की अपील की है।

संगठन के प्रदेश संयोजक श्री संतोष अग्रवाल ने बताया कि राज्य में सम्मेलन के वर्तमान में 181 सदस्य हैं। यहां प्रदेश शाखा स्थापना के साथ ही जिला स्तर पर सदस्यता अभियान चलाया जायेगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि मारवाड़ी सम्मेलन ही एक मात्र ऐसी संस्था है, जो अपने समाज की बुराइयों, कमियों एवं खामियों पर ना सिर्फ चर्चा करती है, बल्कि उनके विरोध में जनमत तैयार कर दूर करने का सामूहिक प्रयास करता है। समाज की प्रतिभाओं को उभारने के लिए छात्रवृत्ति देने के लिए विचार किया जा रहा है। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक समरसता प्रदान करना है। सम्मेलन का प्रयास है कि मारवाड़ी समाज के लोग किसी भी समाज में दूध में चीनी की तरह मिल जायें और वहां की स्थानीय बोली, संस्कृति और साहित्य के आत्मसात कर सके। उन्होंने छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों को भी सम्मेलन के माध्यम से सम्मानित करने की अपील की। कोलकाता से राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार ने भी इस आयोजन में भाग लिया।

अधिवेशन में मारवाड़ी समाज ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये। समाज की कुरीतियां दूर कर समरसता लाने पर जोर दिया गया।

श्री संतोष अग्रवाल ने बताया कि सम्मेलन में समाज की कुरीतियां दूर करने तथा बच्चों और लड़कियों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया। विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा कोष बनाने का फैसला किया गया। इसकी इकाइयां कई राज्यों में होंगी। इससे विद्यार्थियों को आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति देने की योजना है। साथ ही बिना ब्याज के लोन देकर पढ़ाई का इंतजाम भी किया जायेगा। ●

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

संयोजक एवं रायपुर के पूर्व मेयर श्री संतोष अग्रवाल बैठक में स्वागत भाषण एवं अतिथियों का परिचय देते हुए।

रायपुर आगमन पर सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार का भव्य स्वागत हुआ।

अग्रवाल, कैलाश बजाज, सुरज प्रकाश राठी, अमर बंसल, अशोक सुराना, मोहन लाल खण्डेलवाल आदि के साथ ही मारवाड़ी समाज के विभिन्न घटक दलों के पदाधिकारियों व सदस्यों ने भी राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री का अभिनंदन एवं स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन मनोनीत महामंत्री श्री हरिशंकर शर्मा ने किया एवं आभार प्रदर्शन सक्रिय सदस्य श्री शिव टावरी ने किया। इस अवसर पर एक वर्ष के लिए प्रादेशिक समिति का भी मनोनयन कर समिति की घोषणा की गई तथा जिला स्तर पर गठन के संबंध में सुझाव दिया गया। सम्मेलन के छत्तीसगढ़ इकाई के संयोजक श्री संतोष अग्रवाल को समन्वय के साथ ही वर्ष भर की कार्य योजनाओं में सामंजस्य हेतु संयोजक नियुक्त करते हुए वर्ष भर सदस्यता अभियान संचालित करते हुए वर्ष समाप्ति के साथ ही सम्मेलन के संविधान के अनुरूप कार्यकारिणी का निर्वाचन व मनोनयन के माध्यम से पूर्ण करने का राष्ट्रीय अध्यक्ष ने परामर्श दिया। नवगठित कार्यकारिणी के साथ ही विभिन्न समितियों के मनोनित पदाधिकारियों की सूची संलग्न है।

छत्तीसगढ़ प्रांतीय पदाधिकारी की घोषणा

रायपुर के महेश भवन में आयोजित बैठक में 7 अप्रैल को नवगठित छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का उद्घाटन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने किया। बैठक में प्रांत के विभिन्न जिलों से पधारे बड़ी संख्या में समाज के प्रतिनिधि उपस्थित थे। यह जानकारी सम्मेलन के महामंत्री राम अवतार पोद्दार जो उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ने दी।

यह सम्मेलन की 11वीं प्रांतीय शाखा है। रायपुर के पूर्व मेयर श्री संतोष अग्रवाल के संयोजत्व में आयोजित बैठक में प्रांतीय पदाधिकारियों की घोषणा की गयी।

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

(एडहाक कमेटी)

अध्यक्ष : श्री बी. एल. जैन

कार्यकारी अध्यक्ष : श्री रामानंद अग्रवाल, श्री धर्म भंसाली

उपाध्यक्ष : श्री श्रवण शर्मा, श्री डॉ. राजेन्द्र सिंघानिया, श्री मदन लाल राठी, श्री मोहन लाल खण्डेलवाल, श्री सुभाष अग्रवाल, श्री लोकेश कावड़िया, श्री राजीव अग्रवाल, श्री अशोक अग्रवाल, श्री मांगीलाल सोनी।

महामंत्री : श्री हरिशंकर शर्मा (अधिवक्ता), श्री प्रकाश गोलछा, श्री कैलाश बजाज, डॉ. निरंजन हरितवाला, श्री दीपचंद देशलेहरा।

मंत्री : श्री गनपत राय जी मंत्री, श्री वृजमोहन खण्डेलवाल, श्री राजकुमार जैन, श्री दुलीचंद प्रजापति, श्री प्रदीप अग्रवाल।

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

छत्तीसगढ़ प्रांत

संगठन मंत्री : श्री विष्णु डोलिया, श्री कन्हैया लाल अग्रवाल, श्री फूलचंद गोलछा, श्री डॉ. अरुण हरितवाल, श्री सोहनलाल डागा

प्रचार प्रसार मंत्री- श्री रामगोपाल महावार, श्री लक्ष्मीनारायण टिबड़ेवाल, श्री हरीश बिंदल, सीताराम अग्रवाल, श्री गिरिश वोरा,

कोषाध्यक्ष : श्री ओम प्रकाश डागा

लेखा परीक्षक : श्री सी. एल. महावार (सी.ए.)

महिला प्रभारी : श्रीमती पद्मा सिंघानिया

युवा प्रभारी : श्री अमर बंसल

कार्यकारिणी सदस्य : श्री संतोष जैन, श्री हस्तीमल सुराना, श्री प्रीतम गोलछा, श्री गुमान चंद जैन, श्री पारस चोपड़ा, श्री मदनलाल पारख, श्री रतनलाल सिंघल, श्रीगोवर्धनलाल अग्रवाल,श्री मुरारका, श्री रमेश संधी, श्री शांतिलाल लोढ़ा, श्री जे. पी. साबू, श्री रमेश सिंघानिया, श्री प्रेमरतन बागड़ी, डॉ. डी.एन. खण्डेलवाल, श्री अशोक सुराना, श्री आर. पी. खण्डेलवाल, श्री महावीर जिंदल, श्री अशोक अग्रवाल, श्री शांतिलाल संघोई, श्री वल्लभ लाहोटी, श्री विष्णु अग्रवाल, श्री प्रीतम कुमार जैन, श्री मगनलाल अग्रवाल, श्री डॉ. सुरेश अग्रवाल, श्री रामप्रसाद झुनझुनवाला, श्री पुनम जैन, श्री सुमेरमल जी पारख, श्री रामनिवास अग्रवाल, श्री प्रहलाद मिश्रा, श्रीमती सावित्री मंत्री, श्रीमती प्रज्ञा राठी, श्रीमती सरस्वती टावरी, श्री विनोद जैन, श्री एस. एस. पुष्पकर, श्रीमती शीला प्रजापति, श्री सुशील परसरामका, श्री कैलाशचंद दहिया, श्री शंकर लाल शर्मा, श्री गोपाल वोरा, श्री पंकज शर्मा, श्री रूपचंद शर्मा, श्री पुखराज गोलछा, श्री शांतिलाल बरड़िया, श्रीमती इंदिरा पारख, श्री नारायण दास दम्मानी, श्री मंगत राय अग्रवाल, श्री नारायण शर्मा, श्री कन्हैयालाल बैद, श्री रमेश सिंघानिया, श्री रगलाल जी केजरीवाल, श्री प्रकाश मित्तल, श्री रमेश कुमार अग्रवाल, श्री राधेश्याम जिंदल, श्री गिरधर गुप्ता, श्री रामनिवास अग्रवाल, श्री मातादीन मुकीम, श्री अनिल कुमार अग्रवाल। ●

रायपुर के लोकप्रिय स्थानीय टीवी चैनल 'एमटीवी' के संवाददाता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा का विशेष इंटरव्यू लेते हुए साथ में हैं संयोजक श्री संतोष अग्रवाल।

रात्रिभोज में आमंत्रित बहनें।

सम्मेलन सभापति एवं महामंत्री के सम्मान में आयोजित रात्रिभोज।

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

'छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा मिले'

रायपुर, छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद भी छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा नहीं दिया जाना राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी का परिचायक है। भावनात्मक स्वरूप से जनभावनाओं के साथ खिलवाड़ करने में राष्ट्रीय पार्टियां नहीं चूकती। सत्ता से बाहर रहकर वादे करना और सत्ता में आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलना जनप्रतिनिधियों की पहचान बन गई है। संकीर्ण विचारधारा से ऊपर उठकर छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा दिया जाना चाहिए। छत्तीसगढ़ी हर दृष्टि से समृद्ध भाषा है। माधवराव सप्रे ने 107 वर्ष पूर्व छत्तीसगढ़ की कल्पना की थी। संप्रेषण के इस माध्यम को स्वीकार करना चाहिए इससे छत्तीसगढ़ की अपनी अलग पहचान बनेगी।

छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा देने के विषय पर देशबन्धु ने लोगों के विचार जानने का प्रयास किया है।

साहित्यकार **सुशील भोले** का मानना है कि छत्तीसगढ़ी में शब्द कोष समृद्ध है। इसमें साहित्य, कला संस्कृति का पक्ष मजबूत है। राज्य निर्माण के समय छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा की बात पर राजनीतिक पार्टियों ने हामी भरी थी। आज वही लोग पाखंड रच रहे हैं।

राजनीतिक इच्छा शक्ति का अभाव इसमें सबसे बड़ी रुकावट रही है। 16 जिलों में छत्तीसगढ़ी भाषा को अलग-अलग रूप में बोली जाती है। भाषा इतनी सहज व सरल है कि जल्दी ही लोग इससे प्रभावित होते हैं। छत्तीसगढ़ के निवासी भोलेभाले हैं इसी बात का फायदा राष्ट्रीय पार्टी के नुमाइन्दों ने उठाया है। भावनात्मक रूप से लोगों को छलने वालों ने ईमानदारी से कोशिश नहीं की, जबकि हर क्षेत्र की अपनी भाषा होती है। इसी से वहां के निवासियों की पहचान बनती है। इसके बिना हमारा व्यक्तित्व अधूरा है। इस पर ध्यान देकर छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा मिलना ही चाहिए।

अंचल के पुरातत्ववेत्ता व इतिहास विद् प्रो. प्रभुलाल मिश्रा के विचार में दो वर्ष पूर्व जब कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी ने प्रस्ताव पारित कर छत्तीसगढ़ी को राजभाषा देने के प्रस्ताव पर सहमति जताई तो अब देर किस बात की है। जब कोकणी मराठी को भाषा के समान दर्जा दिया जा सकता है जो कि दो जिलों में बोली जाती है तो छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा क्यों नहीं दिया जा सकता। यह तो पूरे 16 जिलों में बोली जाती है। बिहार में मैथिल का भाषा का दर्जा मिला तो छत्तीसगढ़ी जिसका प्राचीन इतिहास रहा है, तामपत्रों में उसकी लिपि वर्णित है उसे क्यों महत्व नहीं दिया जाता है।

बहुत अच्छे ढंग से इसे लोग व्यवहार में लाते हैं। इस बोली में मिठास भी है और आत्मीयता भी। मेरी ये मान्यता है कि पूर्वाग्रहों से हटकर छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा जरूर देना चाहिए।

छत्तीसगढ़ आंदोलन से जुड़े **जागेश्वर प्रसाद** की राय में बजट सत्र में इस प्रस्ताव को नहीं लाया जाना चिंता का विषय है। गोष्ठी सम्मेलन के बाद अब यहां के बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों, युवाओं, महिलाओं को एकजुट होकर छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा दिलाने के लिए संघर्ष करना होगा। इस संबंध में व्यूह रचना करने की जरूरत है।

वरिष्ठ पत्रकार **रमेश नैय्यर** की राय में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने में छत्तीसगढ़ी का उतना ही महत्वपूर्ण योगदान है जितना किसी अन्य भाषा का। संप्रेषण की भाषा होने के साथ ही छत्तीसगढ़ी में काफी वर्षों पूर्व साहित्य रचे गये। छत्तीसगढ़ी हर दृष्टि से समृद्ध भाषा है। इस राजभाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

डॉ. चितरंजन कर छत्तीसगढ़ी को राजभाषा बनाने के पक्ष में अपनी बात रखते हुए कहते हैं कि 15वीं-16वीं शताब्दि से इस संबंध में लिखा जा रहा। भाषा के प्रति कुंठा नहीं होनी चाहिए। हिन्दी छत्तीसगढ़ी की बेटी नहीं सहोदरा है। भाषा पहले संस्कृति होती है और उसे छोड़ने वाला संस्कार नहीं पा सकता। छत्तीसगढ़ी से लेखन की बात करें तो बसंत देशमुख, शिवशंकर शुक्ल, परदेशी राम वर्मा, चंद्रशेखर चकोर, रामेश्वर वैष्णव, दानेश्वर शर्मा जैसे कई दिग्गज हमारे बीच आज भी अपनी बोली को लेखनी का माध्यम बनाकर रचनाक्रम में जुटे हैं। एक बात जरूर है कि समर्थ शब्द कोष की जरूरत है। सांस्कृतिक संदर्भ कोष संचित रूप में होना चाहिए।

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा का मानना है कि छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा दिया जाये। इसमें दो मत नहीं कि भाषा की दृष्टि से छत्तीसगढ़ी काफी समृद्ध है। काफी स्थानों पर इसे हम वर्षों से बोलचाल का माध्यम बनाये हुए हैं। नया राज्य भी बने 6 वर्ष बीत गये तो देर किस बात की। इस पर ठोस पहल की जानी चाहिए।

छत्तीसगढ़ी आंदोलन के अध्यक्ष **राजेन्द्र चंद्राकर** इसे राजभाषा का दर्जा देने व संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के पक्षधर हैं। उन्होंने कहा कि इस पर चिंतन की जरूरत है। ●

-देशबन्धु से साभार

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

छत्तीसगढ़ प्रांत

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का गठन

समाचारपत्रों की एक झलक

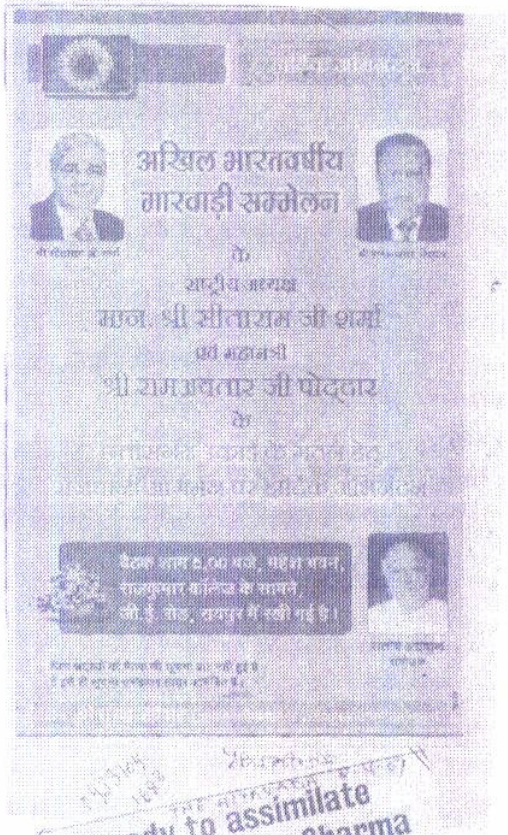

विलास विनाश है।

विनाश की बजाय विकास की बातें करें
एक महाकोष बने 1000 करोड़ का

किशनलाल ईशवारलया

पानी का गिलास आधा खाली है या आधा भरा है। दोनों बातें सही है। उसी तरह समाज का पतन हो रहा है या यूँ कहे समाज का विकास नहीं हो रहा है। मेरे विचार से समाज के विकास की ही, समाजोद्धार, समाज की उन्नति की बाते करें तो अच्छा होगा। समाज में जो पतन की बातें हैं जैसे दहेज प्रथा, फिजुल खर्ची धन का प्रदर्शन, ऐसो आराम में प्रवृत्ति, बुजुर्गों की उपेक्षा, लड़के लड़कियों का आधुनिक फैसन मोह आदि आदि। इन पर बहुत कुछ लिखा जा रहा है, बोला जा रहा है और प्रयत्न भी किया जा रहा है लेकिन समस्या जस की तस है बल्कि गंभीरतम होती जा रही है।

प्रयत्न जारी रहे, लिखना, भाषण आदि में कहीं कमी न हो। चेष्टा करते रहे यही भगवान कृष्ण का उपदेश है। अगर सुधार नहीं हो पा रहा है तो क्या करें हाथ पर हाथ रखकर घर में बैठ जायें। नहीं कदापि नहीं निराश मत होइये, थोड़ा नजरिया बदल दिजिये। हम यह भी सोचना शुरू कर दें कि समाज में तरक्की भी हो रही है शिखर पर है। बड़े बड़े कल कारखाने न केवल अपने देश में बाहर देशों में भी लगाये जा रहे हैं। हजारों लाखों आदमियों को रोजगार मिल रहा है। साथ ही साथ शिक्षा, उपचार और धर्मस्थल भी बनते जा रहे हैं। कितने लाखों लोग का इलाज होता है और कितने (Technical Institutes) खुल रहे हैं और तो और राजनीति, खेल कूद और कला संस्कृति में भी हमारे बच्चे मान सम्मान पा रहे हैं। ये सब हमारे समाज की तो देन है।

जिस विवाह में लाखों करोड़ों खर्च होते हैं हम लोग वर-वधु को आशीर्वाद देने जाते हैं और वहाँ का Reception के बारे में खर्चकर्ता को बधाई भी देते हैं। बहुत बढ़िया बहुत अच्छा Reception का इंतजाम है। ऐसा कहकर उसका मान सम्मान भी करते हैं लेकिन जब बाहर आते हैं तो बुराई करना शुरू कर देते हैं। क्या जरूरत थी इतना खर्च करने की। फालतु का अपना पैसा का प्रदर्शन कर रहा है आदि आदि। ऐसा कहना छोड़ दीजिये और नजरिया बदल डालिये। उसी खर्च करने वाले भाई से समाज के 5-7 गणमान्य सदस्य मिले और कहे-भगवान ने आपको बहुत कुछ दिया है। इतना बढ़िया विवाह करने के लायक बनाया। भगवान आपको और धन दे खूब दे। पर सेठ जी आप जब इतना मन से लगा रहे हैं तो एक दो गरीब कन्याओं का भी उद्धार हो जाये और वह उद्धार 50-60 हजार रुपये में हो सकता है। या यह स्कूल अधूरा पड़ा है या यह धर्मशाला या गउशाला या हस्पताल में भी आपका इसी खुशी के अवसर आपके हाथो कल्याण हो जाये। तो वह सेठ आपकी बात मान लेगा और खुशी खुशी समाज हित दान देगा। आप नदी से एक लोटा पानी निकालने में क्यूं सकुचाते हैं और वह पानी समाज के उद्धार के लिये। आइये, इस ओर बढ़ें।

आज समाज को एक बड़े धन कोष की जरूरत है। एक ऐसा कोष जिससे कोई मारवाड़ी लड़का लड़की अशिक्षित, अविवाहित ओर रोजगार रहित न रहे। यह तभी होगा जब हमारा विशाल कोष बने, कम से कम एक हजार करोड़ का ओर यह बन सकता है। जब मालवीय जी ने बनारस हिन्दू युनीवर्सीटी बगैर पैसे, चन्दा मांग मांगकर इतना बड़ा विशाल प्रतिष्ठान खड़ा कर दिया जबकि उस समय इने गिने पैसे वाले धनिक आदमी थे। अब तो हम लाखों की तादाद में है। क्या इस कोष को खड़ा नहीं कर सकते? कर सकते हैं केवल उत्साह और लगन की जरूरत है। हम सब मारवाड़ी भाई उसमें योगदान दे चाहे एक रुपया ही दे और हम अपने हर अनुष्टान में चाहे दुकान, आफिस, कल, कारखाना या कोई भी कार्य नया करे या नवीनकरण करे इस बृहत्तर कोष में सहयोग दे और यह एक नियम बना ले कि रोजाना कम से कम एक रुपया तो इसमें दें। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसो आपका यह प्रयास रंग लायेगा और इस कोष से आपके सारे सपने पूरे हो जायेंगे। जब तक यह 7000 करोड़ का न हो जाये हम न लेंगे-हर मारवाड़ी भाई अपनी श्रद्धा अनुसार इसमें योगदान देगा। फिर इस कोष से जितने भी स्कूल, कॉलेज, हस्पताल, आप लोग बनवाले। मैं तो कहता हूं क्यूँ नहीं लाखों की तादाद में ट्रस्टी और कार्यकर्ता बने जिससे यह कोष बढ़ता ही रहे और पूरा लाभ मारवाड़ी समाज को पहुंचे। ●

कलकत्ता मारवाड़ी महिला शाखा, पश्चिम बंगाल

कलकत्ता मारवाड़ी महिला सम्मेलन द्वारा कृत्रिम पांव प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन महावीर सेवा समिति में किया गया। चित्र में परिलक्षित हैं दायें से श्रीमती उर्मिला खेतान, मंजु यादुका, अनिता सराफ, प्रादेशिक अध्यक्ष, मो. सलीम सांसद, बिमला डोकानिया तथा अन्य।

कलकत्ता मारवाड़ी महिला शाखा के मुख्य कार्यक्रमों की गतिविधियों का ब्यौरा :-

(1) कांकुड़गाछी में प्याउ चलता है सालों भर पथिक इस जल को पीकर बहुत ही तृप्त होते हैं।

(2) 174, सी आर एवेन्यू में विवाह सम्बन्धी कार्य जैसे - कुंवारे लड़के-लड़कियों/तलाकशुदा/विधवा, विधुर के सम्बन्ध कराये जाते हैं।

अगस्त : "परवर्तक नामक अनाथ आश्रम" में दाल, तेल, फिनाईल साबुन, सर्फ, बिस्कुट, बड़ी इत्यादि सामग्रियों का वितरण किया गया।

अक्टूबर : गांधी जयन्ती के शुभ अवसर पर कृतिम पांव शिविर लगाया गया। इस शिविर में सांसद श्री मोहम्मद सलीम, मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, मा. म. सम्मेलन की प्रांतीय अध्यक्षा श्रीमती अनिता सराफ तथा प्रांतीय अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया भी उपस्थित थे।

नवम्बर : दीपावली प्रीति सम्मेलन बहुत ही हर्ष उल्लास के साथ किया गया। सदस्याओं ने मनभावन, सुस्वाद ब्यंजनों का भरपूर आनन्द लिया तथा बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

जनवरी : संक्रांति पर सदस्याओं ने गरम वस्त्र तथा खाद्य सामग्री गरीबों में वितरण किया।

मार्च : होली प्रीति सम्मेलन तथा सिंघारा करके सदस्याओं को उपहार दिया गया।

-उर्मिला खेतान, सचिव

जेसी पुरुषोत्तम मोदी राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित

गोंदिया। युवाओं की विश्वव्यापी संस्था जेसीआय इंडिया (जेसीस) का 51वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन बेंगलोर में सम्पन्न हुआ। श्री रविशंकरजी ने इसका उद्घाटन किया व श्री वेंकैया नायडू प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अधिवेशन में सम्पूर्ण भारत से आये हुए 3000 प्रतिनिधियों ने सहभाग किया व गोंदिया (महाराष्ट्र) के जेसी पुरुषोत्तम मोदी को वर्ष 2007 के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया।

समाज के लिए यह गौरव की बात है कि जेसी पुरुषोत्तम मोदी ने संस्था के सर्वोच्च राष्ट्रीय पद को सुशोभित किया है। वे जेसीआय गोंदिया सेन्ट्रल में पिछले 14 वर्षों से सतत् सक्रिय हैं। वे इस वर्ष देश के 2 लाख युवा सदस्यों का नेतृत्व करेंगे।

युगपथ चरण

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति

डा. राम मनोहर लोहिया जयन्ती सह-व्याख्यान माला समारोह बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना द्वारा दिनांक 7.4.07 को अपराह्न 3.00 बजे से बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सभागार में आयोजित किया गया। महासचिव श्री प्रह्लाद शर्मा ने बताया कि आज का विषय चौखम्भा राज्य एवं बिहार है।

यह समारोह प्रो. (डा.) एस. एस. तुलस्यान की अध्यक्षता में हुआ। उन्होंने डा. लोहिया के जीवन पर प्रकाश डाला एवं शिक्षा समिति के महत्व पर बताया कि यह संस्था विगत 57 वर्षों से ऋण छात्रवृत्ति प्रदान कर रही है। मंच संचालन श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने किया।

आयोजित व्याख्यान माला का विषय **''चौखम्भा राज्य एवं बिहार''** विषय पर विस्तृत जानकारी सर्वश्री माननीय विधान सभा अध्यक्ष उदय नारायण चौधरी ने, श्री गोपाल कुमार अग्रवाल, एम. एल. ए. एवं हिन्दुस्तान दैनिक के सम्पादक श्री सुनील दूबे ने बताया कि चौखम्भा राज्य डा. लोहिया की कल्पना थी। लोहिया के विचार गाँधीवाद से मेल खाते थे। श्री गोपाल कुमार अगरवाल, एम. एल. ए. ने बताया कि लोहिया ने हिटलर की ओर से जर्मनी के विश्वविद्यालय में शिक्षक बनाने का प्रस्ताव आया था प्रस्ताव को ठुकराते हुए उन्होंने बताया कि हिटलर की विचार धारा मुझसे मेल नहीं खाती।

इस मौके पर समाज के सर्वश्री अमर कुमार अग्रवाल, श्याम सुन्दर हिसारिया, बासुदेव प्रसाद भालोटिया, विजय कुमार बुधिया, डा. आर के मोदी, श्री नथमल टिबड़ेवाल, विश्वानथ अग्रवाल, रामपाल अग्रवाल, नूतन, राधास्वामी, रामावतार पोद्दार, बद्री प्रसाद भीमसरिया एवं श्रीमती कुसुम देवी तुलस्यान, श्रीमती सरोज गुटगुटिया, श्री सरोज जैन आदि माहिलाओं ने भी भाग लिया।

नथमल टिबड़ेवाल, अध्यक्ष, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने कहा कि हमारे समाज को धन की आवश्यकता नहीं है सिर्फ शांति और सुरक्षा चाहिए।

इसी अवसर पर समाज के लब्ध प्रतिष्ठित पुरुष एवं महिला की श्रेणी में क्रमशः श्री हरि लाल अग्रवाल, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, उड़ीसा को स्व. गंगा प्रसाद बुधिया एवं श्रीमती सोरज गुटगुटिया को स्व. मंजू गुप्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा माध्यमिक परीक्षा 2006 में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करने वाली नवगछिया की छात्रा सुश्री रजनी एवं बेगूसराय के छात्र राजकुमार को क्रमशः गायत्री देवी मोती लाल सुरेका, आनन्द बजाज पुरस्कार की राशि 2100 रु. नगद, प्रतीक चिन्ह, प्रमाण पत्र एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले बेगूसराय के छात्र कमल किशोर आर्य एवं हरनौत की छात्रा खुशबू कुमारी को क्रमशः प्रभुदयाल छापड़िया एवं कलावती देवी छापड़िया पुरस्कार की राशि 1500 रुपया नगद, प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया।

महासचिव श्री प्रहलाद शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। ●

मामराज अग्रवाल राष्ट्रीय पुरस्कार

राजस्थान: प्रगति के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है, ज्ञान मात्र अर्जन का ही साधन नहीं है बल्कि समाज, प्रदेश और राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है। ये बातें राज्यपाल प्रतिभा पाटील ने आज यहां राजभवन में मामराज अग्रवाल फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा आयोजित मामराज अग्रवाल राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि मानव संसाधन को विकसित करना होगा। इसके लिए हमें ग्रास रुट स्तर पर प्रयास करना होगा। इस कार्य के लिए प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी, विधान सभा की अध्यक्ष सुमित्रा सिंह ने कहा कि प्रतिभा का सम्मान होना ही चाहिए। इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। उद्योग मंत्री नरपत सिंह राजवी ने कहा कि देश की तरक्की के लिए मानव संसाधन का विकास दोनों जरुरी है। पूर्व मंत्री डा. बीडी कल्ला ने कहा कि विद्यार्थीयों की सफलता के लिए समय, प्रबंधन व एकाग्रता जरूरी है। विद्या, शक्ति एवं धन का समाज के विकास में सदुपयोग करना चाहिए। इस अवसर पर प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ. रामगोपाल अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे, संस्था के अध्यक्ष मामराज अग्रवाल ने स्वागत भाषण देते हुए घोषणा की कि वे राज्यपाल की प्रेरणा से अगले वर्ष से प्राथमिक शिक्षा के प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी सम्मानित करेगी। संस्था के संरक्षक एवं पत्रकार श्याम आचार्य ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस अवसर पर राज्यपाल को राज्यपाल राहत कोष के लिए फाउंडेशन के अध्यक्ष ने 21 हजार रुपये की राशि का चेक भेंट किया। प्रतिभावान विद्यार्थियों के सम्मान समारोह में राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केंद्रिय शिक्षा बोर्ड और विश्वविद्यालय की विधि, मेडिकल एवं चार्टर्ड एकाउंटेन्ट परीक्षा में अव्वल रहे 94 छात्र एवं छात्राओं को राज्यपाल पाटील ने प्रमाण-पत्र अंग वस्त्र और नगद पुरस्कार प्रदान कर सामानित किया। कार्यक्रम का संचालन महावीर प्रसाद रावत ने किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री घनश्याम तिवाड़ी, मीनाक्षी दूजा, ब्रह्मानंद अग्रवाल, दामोदर अग्रवाल, सुनिता अग्रवाल, संजय दूधावत और भवानी शाह भी उपस्थित थे। ●

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार को फेडरेशन ऑफ स्माल एंड मिडियम इंड्रस्टीज (फास्मी) द्वारा इस वर्ष विशेष उत्कृष्टता सम्मान के लिए चुना गया। चित्र में श्री पोद्दार (चेयरमैन-वंडर इमेज प्रा.लि.) राज्य के कुटीर उद्योग राज्यमंत्री नारायण विश्वास से उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

डोकानिया चैरिटेबल ट्रस्ट

भारत रिलीफ सोसाइटी द्वारा सोसाइटी भवन में नेत्र चिकित्सा विभाग के तहत नेत्र शल्य चिकित्सा केन्द्र के निर्माण का कार्य अनवरत चल रहा है। बहुत ही हर्ष का विषय है कि श्री श्यामलालजी डोकानिया चैरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से सोसाइटी ने शल्य चिकित्सा कक्ष का निर्माण होने से पहले ही सुदक्ष डाक्टर की देखरेख में जनसाधारण को नि:शुल्क शल्य चिकित्सा एवं नि:शुल्क चश्मा वितरण का कार्य नववर्ष के प्रारम्भ होने के साथ साथ सुचारु रूप से आरम्भ कर दिया। भारत रिलीफ सोसाइटी द्वारा सोसाइटी भवन से प्रत्येक सप्ताह सोमवार एवं वृहस्पतिवार को नेत्र परीक्षण कर यह सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। साथ ही डोकानिया चैरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से विभिन्न स्थानों पर नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित कर दूर-दराज ग्रामीण क्षेत्र में भी यह सेवा उपलब्ध करायी जाती जा रही है। ●

राष्ट्रीय नेता थे बाबू जगजीवन राम : श्री प्रबोध चन्द्र सिन्हा

कोलकाता। बाबू जगजीवन राम राष्ट्रीय नेता थे। उनके हर प्रदेश में बड़ी संख्या में समर्थक थे। दलितों का अधिकार दिलाने में बाबू जी की अहम-भूमिका थी। वे सभी वर्गों के सर्वमान्य थे। उनकी दृष्टि और विचार आमजन के हितों का ख्याल रखती थी। यह बातें पूर्व मंत्री प्रबोध चन्द्र सिन्हा ने बाबू जगजीवन राम जन्म शताब्दी समारोह के मौके पर यहां आयोजित कार्यक्रम में कही।

कार्यक्रम का आयोजन बाबू जगजीवन राम जन्म शताब्दी समारोह समिति की ओर से किया गया था। कार्यक्रम में पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रताप चन्द्र चंदर, विधानसभा के उपाध्यक्ष भक्तिपद घोष, समाजसेवी सीताराम शर्मा, आत्माराम सोंथलिया, हरिशंकर राम ने भी अपने विचार रखे।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रताप चंद्र चंदर ने कहा कि बाबू जगजीवन राम ने दलित विकास, शिक्षा प्रसार, कृषि विकास का महत्वपूर्ण काम किया। भारत को एक सूत्र में पिरोकर रखने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। बाबू जी सब को एक साथ रखकर चलने की कला जानते थे। उनके विभिन्न मंत्रित्वकाल की महत्वपूर्ण उपलब्धियों का इतिहास गवाह है।

राज्य विधानसभा की उपाध्यक्ष शक्तिपद घोष ने कहा कि बाबू जगजीवन राम ने दलितों का नेतृत्व किया। वे बेहतरीन प्रशासक रहे। उन्होंने कहा कि केवल आयोजन के जरिये याद कर जगजीवन राम को श्रद्धांजलि नहीं दी जानी चाहिए। यह पता करने की कोशिश करनी चाहिए कि आखिर क्या कारण है कि आजादी के साठ सालों बाद भी विकास कुछ लोगों तक ही सीमित है।

समाजसेवी सीताराम शर्मा ने कहा कि वर्तमान में मौजूद समस्याओं पर मुखर होने की जरूरत है। इसके लिए बाबू जगजीवन राम के विचारों और सिद्धांतों से प्रेरणा लेने की जरूरत है।

आत्माराम सोंथलिया ने कहा कि समता के संत के जीवन का हर पहलू अनुकरणीय है। ●

दुर्गापुर शाखा होलिकोत्सव

दुर्गापुर शाखा होलिकोत्सव का प्रिती सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन गत 4.3.07 को शाम 6 बजे से श्री लक्ष्मी नारायण भवन में सम्पन्न हुआ। इसमें दुर्गापुर स्टील प्लांड के एक्सक्यूटिव डायरेक्टर श्री जे. एल. अग्रवाल का सम्मानित किया गया। उन्होंने अपनी संस्था के ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया तथा उन्हीं के कर-कमलों द्वारा समाज के प्रतिभाशाली छात्रों को प्रोत्साहित करने हेतु चांदी का मेडल एवं प्रोत्साहन पत्र प्रदान किया गया। ●

शिशु स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

विधाननगर माहेश्वरी सभा द्वारा 25 मार्च को पाचुरिया ग्राम में जनस्वास्थ्य रक्षा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें **शिशु स्वास्थ्य परीक्षण शिविर** एवं थैलेसेमिया परीक्षण शिविर सेरफ थैलेसेमिया प्रिवेन्शन फेडरेशन के विशेषज्ञों द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि थे श्री जगदीश चन्द्र एन मूंधड़ा, कर्मठ समाजसेवी। ●

योगदान की सराहना

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन कानपुर शाखा द्वारा आयोजित नि:सुल्क स्वास्थ्य परीक्षण केन्द्र का उद्घाटन करते हुए नगर प्रमुख श्री रवीन्दर पाटनी जी ने नि:शुल्क चिकित्सा कार्यक्रमों के आयोजनों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा शिक्षा, चिकित्सा व स्वावलम्बना हेतु दी जा रही सेवाओं की प्रशंसा की। क्षेत्रीय विधायक 'श्री सलिल विश्नोई' जी ने कहा कि यह दुर्भाग्य की बात हैकि स्वतंत्रता प्राप्ति के 60 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं; फिर भी कितने लोग चिकित्सा के आभाव में बिमारियों से ग्रस्त हैं या अकाल मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के कैम्पो से जागरूकता पैदा होती है। इस शिविर में नि:शुल्क मोतियाबिन्द, लेन्स प्रत्यारोपण, एनीमिया दवा का वितरण, खून की जाँच एवं आंख, नाक, गला एवं दन्त परीक्षण के साथ ही सामान्य परीक्षण और हड्डी, गुर्दा एवं हृदय रोग विशेषज्ञ द्वारा जाँच की गई। इस अवसर पर अध्यक्ष सुशील कुमार तुलस्यान व सचिव संजय अग्रवाल ने स्वागत किया, संयोजक श्री गोपाल तुलस्यान ने कार्यक्रम की जानकारी दी। ●

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity .
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication- 29th April 2007
RNI Regd. No . 2868/68

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सजन-गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की बनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७०००७

फोन - २२६८-०३१९

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319

To,